संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 319
पृष्ठ 8
शनिवार
08 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- पढ़ाई के वक्त बच्चे का मन...

विचार- क्या प्रश्नपत्र लीक विरोधी कानून...

खेल- आठ महीने में 10 भारतीय खिलाड़ियों...

अम्बेडकरनगर में मुख्यमंत्री योगी बोले-

आज उत्तर प्रदेश माफिया-मुक्त और कर्फ्यू-मुक्त है

अम्बेडकरनगर,एजेंसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को अंबेडकरनगर पहुंचे। उन्होंने मंच से सपा पर जमकर हमला बोला। योगी ने कहा– इसा सपा के लोगों ने विधानसभा नहीं चलने दी। हो–हल्ला करने लगे। उनके लोगों ने कोहराम मचाया। हमने बजट में सामाजिक विभूतियों को सम्मानित करने की योजना बनाई थी। रविदास महाराज, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर, छत्रपति शाहू जी महाराज से जुड़े स्मारकों के लिए व्यवस्था करने की योजना बनाई। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों के मानदेय बढ़ाने की व्यवस्था की थी। कोटेदारों का इंसेंटिव बढ़ाने और चौकीदारों का मानदेय बढ़ाने की व्यवस्था की थी। इन लोगों ने विधानसभा नहीं चलने दी। लेकिन हम रुकने वाले नहीं हैं। दंगाइयों के सामने सपा सरकार घुटने टेकती थी। संभल

में सपा के एक गुंडे ने दंगा कराया था। आपने देखा, सरकार उस गुंडे को घुटनों पर लाकर नाक रगड़वा रही है। बरेली में एक गुंडा दंगे कराता था। एक बार प्रशासन उसके आगे थोड़ा सहमा। मैंने कहा कि जरा रुक जाओ, उसको आने दो, फिर बताते हैं। आज वह गुंडा जेल में कष्ट उठा रहा है। कह रहा है कि छोड़ दो, गलती हो गई। अब ऐसा नहीं होगा। योगी ने कहा– पहले नौकरी का विज्ञापन आते ही चाचा–भतीजे की जोड़ी निकल पड़ती थी। युवाओं के हक पर ये जोड़ी डाका डालती थी। रोज दंगे होते थे। कभी मेरठ, तो कभी अलीगढ़, मुरादाबाद, सहारनपुर, तो कभी बरेली, लखनऊ और कानपुर में दंगे होते थे। सपा का झंडा लेकर गुंडे जाते थे और वसूली करते थे। जिस गाड़ी में सपा का झंडा होता था, उस गाड़ी में सपा का गुंडा होता था। आज हमारी सरकार इन गुंडों से निपटने का काम कर रही है।

सपा सरकार ने हर जिले में एक माफिया पाल लिया था। कहीं बालू माफिया, कहीं भू–माफिया, तो कहीं वन माफिया पाल रखा था। इनके इतिहास को देखकर नौजवान पीढ़ी को बताना चाहिए कि कैसे इन लोगों ने अराजकता फैला रखी थी। आज उत्तर प्रदेश माफिया–मुक्त और कर्फ्यू–मुक्त है। हमने कहा कि अगर नौजवानों के भविष्य से कोई खिलवाड़ करेगा तो उसकी जगह जेल में होगी। बाप–दादा की कमाई को जब्त कर गरीबों में बांट देंगे। आज कोई छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। आज कोई व्यापारी को धमका नहीं सकता। अगर किसी ने व्यापारी को धमकाया तो जेल में भेजने का काम करेंगे।

हर जिले के व्यंजन को सरकार ने नई पहचान दी है। प्रदेश में 16 करोड़ लोगों को फ्री में राशन दिया जा रहा है। जो बच्चे जन्म से मूक–बधिर थे, बोल और सुन नहीं सकते थे, उन बच्चों की हमने सर्जरी करवाई। आज मैंने ऐसे दो बच्चों को मंच पर बुलाकर प्रमाणपत्र दिए हैं। उनके इलाज पर पैसा खर्च कर उन्हें सक्षम बनाया है। सपा सरकार में इंसेफेलाइटिस से 1,200 बच्चे शिकार होते थे।

बांग्लादेश सरकार के बारे में शेख हसीना की कही बातों का नहीं करते सपोर्ट- विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली,एजेंसी। शेख हसीना की ब्रीफिंग पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि सरकार का इसमें कोई रोल नहीं था। यह एक प्राइवेट मीडिया कंपनी ने ऑर्गनाइज किया था और सरकार फोरम में कही गई किसी भी बात का सपोर्ट नहीं करती, खासकर बांग्लादेश की बनी हुई सरकार के बारे में। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की पांच अगस्त को नई दिल्ली में दो साल बाद पहली बार हुई प्रेस ब्रीफिंग से भारत सरकार ने पल्ला झाड़ लिया है। सरकार ने साफ किया है कि इसमें हमारा यानी कि सरकार का कोई रोल नहीं है और वह ब्रीफिंग में कही गई शेख हसीना की किसी भी बात का, खासतौर पर बांग्लादेश सरकार के संबंध में बात का सपोर्ट नहीं करती है। बांग्लादेश में दो साल पहले हुई हिंसा की वजह से शेख हसीना को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर भारत आना पड़ा था और तब से

वह यहीं रह रही हैं। शेख हसीना की हालिया मीडिया बातचीत पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, मैं अपनी बात दोहरा रहा हूं। सरकार का इसमें कोई रोल नहीं था। यह एक प्राइवेट मीडिया कंपनी ने ऑर्गनाइज किया था और सरकार फोरम में कही गई किसी भी बात का सपोर्ट नहीं करती, खासकर बांग्लादेश की बनी हुई सरकार के बारे में।" हसीना के कार्यक्रम के बाद बांग्लादेश ने कड़ी नाराजगी जताते हुए इसे देश की संप्रभुता का अपमान करार दिया है। भारत में निर्वासित जीवन जी रहीं हसीना ने पांच अगस्त को विदेशी संवाददाता क्लब के एक कार्यक्रम में बांग्लादेश सरकार और उन्हें अपदस्थ किए जाने से संबंधित घटनाक्रम और वहां के मौजूदा हालातों के बारे में अपने विचार रखे थे। शेख हसीना ने बुधवार को घोषणा कि थी कि वह देश को सही राह पर लाने के वास्ते दिसंबर में स्वदेश लौटने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं और इसके लिए गिरफ्तारी या मौत की सजा के जोखिम का सामना करने को भी तैयार हैं। शेख हसीना ने यह बात भारत आने के बाद पहली बार डिजिटल तरीके से आयोजित प्रेसवार्ता में कही।

तमिलनाडु के हित में कर्नाटक से बातचीत का रखा था प्रस्ताव : सीएम विजय

चेन्नई,। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने शुक्रवार को कहा कि कावेरी मुद्दे पर पड़ोसी राज्य कर्नाटक के साथ बातचीत का प्रस्ताव उन्होंने ही रखा था ताकि इस पर सकारात्मक परिणाम निकल सके। मुख्यमंत्री ने विधानसभा में कहा कि वह कावेरी मुद्दे पर ओछी राजनीति में नहीं पड़ना चाहते। कावेरी मुद्दा उठाने वाले विपक्ष के नेता उदयनिधि स्टालिन को जवाब देते हुए विजय ने 1969 के बाद से तमिलनाडु द्वारा इस मुद्दे को निपटाने के तरीकों को रेखांकित किया जिसमें बातचीत पर विचार करने से लेकर कानूनी रास्ता अपनाने तक के कदम शामिल हैं। इस पृष्ठभूमि पर उन्होंने कहा कि उनकी सरकार कावेरी मुद्दे पर कानूनी रूप से निपटने के लिए दृढ़ है।

पटना में हादसे के बाद बेकाबू भीड़ का तांडव

पटना,। शुक्रवार को बिहार की राजधानी पटना के बड़ी पहाड़ी इलाके में तेज रफ्तार बस से कुचलकर एक व्यक्ति की मौत हो गई, जिसके बाद वहां हिंसा फैल गई। इस घटना से नाराज स्थानीय लोगों ने बस की खिड़कियां तोड़ीं और फिर उसमें आग लगा दी। इस घटना से इलाके में भारी अफरा–तफरी मच गईय यह इलाका अगमकुआं पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में आता है। इसके कारण 10 किलोमीटर लंबा ट्रैफिक जाम भी लग गया, जिसके बाद भीड़ को हटाने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया।

राहुल गांधी ने पेपर लीक पर भाजपा को घेरा

आवाजें एक साथ उठती हैं तभी सरकार झुकती है

नयी दिल्ली,एजेंसी। शुक्रवार को प्रयागराज में अपने 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम से पहले, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार तभी झुकती है जब आवाजें एक साथ उठती हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि परीक्षा के पेपर लीक होने के खिलाफ छात्रों के लगातार विरोध–प्रदर्शनों ने सरकार को जवाबदेही तय करने के लिए मजबूर किया। गुरुवार को एक्स पर एक पोस्ट में, गांधी ने भर्ती परीक्षाओं में कथित गड़बड़ियों और पेपर लीक को लेकर महीनों तक चले विरोध

–प्रदर्शनों के बाद पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे का जिक्र किया और कहा कि सामूहिक कार्रवाई ने सरकार को जवाब देने के लिए मजबूर किया। गांधी ने कहा कि प्रयागराज वह शहर है जहाँ सबसे ज़्यादा युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। यहाँ का हर छात्र जानता है कि सिस्टम बेईमान हो गया है। छात्रों की मेहनत में कोई कमी नहीं हैय समस्या उस सिस्टम में है जो उनकी मेहनत की कद्र नहीं करता। उन्होंने नौकरी के उम्मीदवारों के सामने आने वाली समस्याओं में पेपर लीक, रुकी हुई भर्ती प्रक्रिया और नियुक्तियों में लंबी देरी का जिक्र किया। कोटा और देहरादून में छात्रों के साथ अपनी हालिया बातचीत का जिक्र करते हुए, गांधी ने कहा कि अलग–अलग राज्यों में भी ऐसी ही शिकायतें सामने आई हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि दिल्ली में परीक्षा प्रणाली पर सवाल उठाने वाले छात्रों के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई की। उन्होंने कहा कि आखिरकार, एक मंत्री को इस्तीफा देना ही पड़ा। यह सरकार तभी झुकती है जब लोग एकजुट होकर आवाज उठाते हैं।ष उन्होंने छात्रों को 8 अगस्त को शाम 5 बजे प्रयागराज के ज्ञच ग्राउंड में होने वाली बातचीत में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। ज्ञच कॉलेज मैनेजमेंट द्वारा अपने स्पोर्ट्स ग्राउंड के इस्तेमाल की मंजूरी वापस लेने के बाद इस कार्यक्रम पर कुछ समय के लिए अनिश्चितता के बादल छा गए थे। मैनेजमेंट ने इसके लिए पढ़ाई–लिखाई से जुड़ी वजहों और इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस आदेश का हवाला दिया था जिसमें कहा गया है कि शैक्षणिक गतिविधियों में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए।

भारत के मामलों में दखल बंद करे पाकिस्तान : सीएम अब्दुल्ला

श्रीनगर,एजेंसी। जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि जम्मू–कश्मीर भारत का आंतरिक विषय है और इससे जुड़े मुद्दों पर भारत सरकार और यहां के लोग खुद फैसला करेंगे। मुख्यमंत्री ने पाकिस्तान की ओर इशारा करते हुए कहा कि जब भारत में चुनाव होते हैं तो पाकिस्तान उन पर सवाल उठाता है, लेकिन अपने यहां होने वाली घटनाओं की जिम्मेदारी उसे खुद लेनी चाहिए। हर देश को अपने आंतरिक मामलों को संभालने का अधिकार है। उनके चुनाव उनकी जिम्मेदारी हैं और

हमारे चुनाव हमारी जिम्मेदारी। पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू–कश्मीर में हालात का जिक्र करते हुए कहा कि वहां हो रही हिंसा और आम लोगों की मौतों को लेकर भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जांच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को अपने पुराने बयानों को याद करना चाहिए, जब भारत में वर्ष 2008, 2010 और 2016 के हालात पर उसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से जांच की मांग की थी। वहां दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए। सच्चाई सामने आने के लिए निष्पक्ष जांच जरूरी है। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि रूस–यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया के तनाव जैसे कई अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के कारण पीओके की स्थिति पर दुनिया का ध्यान कम है। उन्होंने कहा कि जम्मू–कश्मीर के लोगों को वहां रहने वाले लोगों की चिंता है क्योंकि एक समय में वे भी हमारे ही लोग थे और वह चाहते हैं कि वहां हालात बेहतर हों। उमर अब्दुल्ला ने साफ किया कि उनकी कोई भी बात पाकिस्तान के लोगों या देश के खिलाफ नहीं है। हमारी आपत्ति पाकिस्तान की सरकार की नीतियों से है, किसी देश या वहां के लोगों से नहीं। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने नीट परीक्षा में अनियमितताओं को लेकर प्रदर्शन कर रहे छात्रों का समर्थन किया।

युवाओं को आपसे प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं- प्रियंका

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने शुक्रवार को आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत पर निशाना साधा। उन्होंने भागवत की जेन जी और जेन अल्फा के साथ हुई बातचीत के बाद कहा कि देश के युवाओं को उनसे किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। संसद परिसर के बाहर पत्रकारों से बात करते हुए कांग्रेस सांसद ने कहा, श्उन्हें आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत जी से प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं है।

उनकी ये टिप्पणी आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत द्वारा एक सत्र के दौरान जेन जेड और जेन अल्फा के साथ बातचीत करने के एक दिन बाद आई है।

लोकसभा में बोले नड्डा

आयुष्मान भारत नियमों के उल्लंघन पर 2,359 अस्पताल पैनल से बाहर

नयी दिल्ली,एजेंसी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा ने शुक्रवार को लोकसभा को बताया कि इस साल 31 मई तक, आयुष्मान भारत–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने के कारण राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने 2,000 से ज़्यादा अस्पतालों को सूची से हटा दिया है और 1,200 अन्य को निलंबित कर दिया है। नड्डा ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि योजना के दिशानिर्देशों के उल्लंघन के लिए 29 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं और 328.49 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया है। नड्डा ने कहा कि नियमों के

उल्लंघन के कारण 2,359 अस्पतालों को सूची से हटाया गया है। उन्होंने कहा कि इस योजना में धोखाधड़ी के मामले में 'कतई बर्दाश्त नहीं करने की' नीति अपनाई जाती है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के तहत राष्ट्रीय धोखाधड़ी रोधी इकाई संदिग्ध दावों का पता लगाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग पर आधारित स्वचालित प्रणाली का इस्तेमाल करती है। उन्होंने कहा कि ये स्वचालित प्रणालियां दावा जमा होने के 24 घंटे के भीतर असामान्य दावा पैटर्न की पहचान करती हैं, जिनमें अनधिकृत बिलिंग, दोहरी प्रविष्टि, बढ़ा–चढ़ाकर बताई गई प्रक्रियाओं और मरीज की पहचान का गलत इस्तेमाल शामिल है। मंत्री ने कहा कि संदिग्ध माने गए दावों की भुगतान से पहले जांच की जाती है और धोखाधड़ी वाले दावों का भुगतान नहीं किया जाता है, जिससे 31 जुलाई, 2026 तक 676.14 करोड़ रुपये की बचत हुई है। उन्होंने कहा कि अस्पतालों को निलंबित करने और सूची से हटाने के अलावा, योजना के दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने वाले अस्पतालों के खिलाफ जुर्माना लगाने और प्राथमिकी दर्ज करने जैसी कार्रवाई भी की जाती हैं।

24 घंटे में यमुना 34 सेमी, गंगा 31 सेमी तक बढ़ी, फिलहाल सभी तटबंध सुरक्षित

प्रयागराज। लगातार हो रही बारिश का असर गंगा और यमुना के जलस्तर पर दिखने लगा है। पिछले 24 घंटे में दोनों नदियों के जलस्तर में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है। हालांकि, दोनों नदियां अभी खतरे के निशान से काफी नीचे बह रही हैं और जिले के सभी तटबंध सुरक्षित हैं। लगातार हो रही बारिश का असर गंगा और यमुना के जलस्तर पर दिखने लगा है। पिछले 24 घंटे में दोनों नदियों के जलस्तर में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है। हालांकि, दोनों नदियां अभी खतरे के निशान से काफी नीचे बह रही हैं और जिले के सभी तटबंध सुरक्षित हैं। सिंचाई विभाग के अनुसार शुक्रवार सुबह आठ बजे नैनी में यमुना का जलस्तर 75.56 मीटर दर्ज किया गया, जो पिछले 24 घंटे में 34 सेंटीमीटर बढ़ा है। वहीं फाफामऊ में गंगा का जलस्तर 78.83 मीटर दर्ज किया गया, जिसमें 23 सेंटीमीटर की वृद्धि हुई। छतनाग में गंगा का जलस्तर 75.23 मीटर रहा, जो 24 घंटे में 31 सेंटीमीटर बढ़ा है। बारिश की बात करें तो नैनी में 19 मिमी, फाफामऊ में 38.8 मिमी और छतनाग में 34.6 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। गंगा और यमुना का खतरे का निशान 84.734 मीटर निर्धारित है। विभाग के अधिकारियों के मुताबिक सभी तटबंध सुरक्षित हैं और जलस्तर पर लगातार निगरानी रखी जा रही है।

सेप्टिक टैंक में शटरिंग खोलने के लिए उतरे दो मजदूरों की मौत

प्रयागराज। औद्योगिक थाना क्षेत्र के गणेशगंज डेरी नेवादा समोगर के पास जहरीली गैस की चपेट में आने से दो मजदूरों की मौत हो गई। शुक्रवार को दोनों मजदूर धर्मेंद्र केसरवानी के मकान के अंदर बने सेप्टिक टैंक की शटरिंग खोलने के लिए उतरे थे। औद्योगिक थाना क्षेत्र के गणेशगंज डेरी नेवादा समोगर के पास जहरीली गैस की चपेट में आने से दो मजदूरों की मौत हो गई। शुक्रवार को दोनों मजदूर धर्मेंद्र केसरवानी के मकान के अंदर बने सेप्टिक टैंक की शटरिंग खोलने के लिए उतरे थे। टैंक में जहरीली गैस होने के कारण दोनों की हालत बिगड़ गई। तत्काल उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन दोनों की मौत हो गई। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंच गई। एसीपी ने भी घटनास्थल का जायजा लिया। एसीपी सुनाल कुमार सिंह ने बताया कि शुक्रवार को सुबह 10 बजे शटरिंग खोलने के लिए दोनों मजदूर सेप्टिक टैंक में उतरे थे। टैंक में गैस होने के कारण दोनों अचेत हो गए। फायर ब्रिगेड की टीम ने दोनों को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया, जहां दोनों की मौत हो गई। मजदूरों की पहचान का प्रयास किया जा रहा है।

सुलेम सराय व्यापार मंडल के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए नरेंद्र खेड़ा मांटू, वीरेंद्र महामंत्री बने

प्रयागराज। सुलेम सराय व्यापार मंडल ने नरेंद्र खेड़ा मांटू को अपना अध्यक्ष निर्विरोध चुन लिया है। यह निर्णय बृहस्पतिवार को नाम वापसी के दिन किसी अन्य नामांकन के अभाव में लिया गया। व्यापार मंडल की समिति ने पहले मतदान से चुनाव कराने का फैसला किया था। सुलेम सराय व्यापार मंडल ने नरेंद्र खेड़ा मांटू को अपना अध्यक्ष निर्विरोध चुन लिया है। यह निर्णय बृहस्पतिवार को नाम वापसी के दिन किसी अन्य नामांकन के अभाव में लिया गया। व्यापार मंडल की समिति ने पहले मतदान से चुनाव कराने का फैसला किया था। अध्यक्ष सहित अन्य पदों के लिए चार अगस्त को व्यापारियों ने नामांकन दाखिल किए थे। लेकिन अध्यक्ष पद पर केवल नरेंद्र खेड़ा मांटू ने ही पर्चा भरा था। चुनाव अधिकारी राजकुमार केसरवानी, दिनेश केसरवानी, प्रदीप केसरवानी और धर्मचंद जायसवाल ने उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया। महामंत्री पद पर वीरेंद्र केसरवानी और कोषाध्यक्ष पद पर निरंकार साहू भी निर्विरोध चुने गए।

इस अवसर पर प्रयाग व्यापार मंडल अध्यक्ष राणा चावला और शहर पश्चिम व्यापारी महासंघ के महामंत्री धनंजय सिंह ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को अतुल केसरवानी, पीयूष जयसवाल, गुलशन अरोरा, मुकेश साहू, अंकुर रस्तोगी, राकेश केसरवानी, अक्षय सिंह बिहारी, सुनील केसरवानी, अजय गुप्ता, सुनील कक्कू आदि ने भी बधाई दी है।

पहली छुपाकर दूसरी शादी करने वाले दोषी की सजा घटी, दोषसिद्धि बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पहली शादी की जानकारी छुपाकर दूसरी शादी करने और धोखे से संबंध बनाने के मामले में दोषी ठहराए गए बुलंदशहर निवासी राधे श्याम की दोषसिद्धि को बरकरार रखा। हालांकि कोर्ट ने 72 वर्षीय अपीलकर्ता की उम्र, स्वास्थ्य और 39 वर्षों तक लंबित रही अपील को देखते हुए उसकी सजा घटाकर पहले से काटी गई अवधि तक सीमित कर दी। यह आदेश न्यायमूर्ति तेज प्रताप तिवारी की एकल पीठ ने पारित किया। अभियोजन के अनुसार जनवरी 1984 में जयराम ने पीड़िता के परिजनों को बताया कि उसका भतीजा राधेश्याम अविवाहित है। इसी भरोसे पर फरवरी 1984 में दोनों का विवाह संपन्न हुआ। विवाह के बाद पीड़िता जब मेरठ स्थित ससुराल पहुंची तो वहां उसे पता चला कि राधेश्याम की एक पत्नी पहले से घर में रह रही है। विरोध करने पर आरोपी ने उसे जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद मामला दर्ज कराया गया। ट्रायल कोर्ट ने राधेश्याम को दुष्कर्म, धोखाधड़ी व अन्य मामले में चार वर्ष की सजा सुनाई थी। सह–आरोपी जयराम को भी सजा सुनाई थी लेकिन अपील लंबित रहने के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। याची अधिवक्ता ने दलील दी कि राधे श्याम ने विवाह से पहले ही अपनी पहली शादी और कथित तलाक की जानकारी दे दी थी तथा उनकी बिरादरी में आपसी सहमति से तलाक की प्रथा प्रचलित है। राज्य सरकार की ओर से दलील दी गई कि नोटरी के माध्यम से तैयार किया गया तलाकनामा कानूनन वैध तलाक नहीं माना जा सकता। हाईकोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद कहा कि आरोपी की ओर से प्रस्तुत कथित तलाक विलेख किसी सक्षम अदालत की तलाक डिक्री का स्थान नहीं ले सकता।

भिंडी ने जीता यूएई का दिल

प्रयागराज। जिले की भिंडी खाड़ी देशों में सबसे अधिक पसंद की जा रही है। जुलाई में 20.83 मीट्रिक टन भिंडी यूएई भेजी गई है। इसके पहले पिछले वित्तीय वर्ष में 80 मीट्रिक टन भिंडी का निर्यात किया गया था। किसानों की उपज अब देश ही नहीं, बल्कि विदेश के बाजारों में भी अलग पहचान बना रही है। तीन वर्षों में मंडल से कृषि एवं उद्यान उत्पादों के निर्यात से करीब 112 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ है। मंडल के सहायक कृषि विपणन अधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र बताते हैं कि मंडल में मिर्च के बाद भिंडी सबसे अधिक निर्यात करने वाला उत्पाद बन गया है। कृषि निर्यात नीति–2019 के तहत किसानों, एफपीओ और कृषि उद्यमियों को अब 50 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है। 50 से 100 हेक्टेयर के कृषि निर्यात क्लस्टर विकसित करने पर छह लाख रुपये तक प्रोत्साहन है। पैकेजिंग, ब्रांडिंग और गुणवत्ता सुधार पर 40 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रुपये, जबकि निर्यात के लिए 25 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता सरकार दे रही है।

माफिया अतीक के रसूख से कानूनी शिकंजे तक... तीन साल में बदल गई पांचों बेटों की तस्वीर

प्रयागराज। कभी प्रयागराज के नामी स्कूल में पढ़ने वाले माफिया अतीक अहमद के पांचों बेटे आज अलग–अलग कानूनी मामलों, जेल, मुठभेड़ और पारिवारिक त्रासदियों के कारण सुर्खियों में हैं। उमेश पाल हत्याकांड के बाद तीन वर्षों में पूरे परिवार की तस्वीर पूरी तरह बदल गई।

माफिया अतीक अहमद के पांचों बेटों की जिंदगी पिछले कुछ वर्षों में पूरी तरह बदल गई। कभी शहर के प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ने वाले अतीक के बेटे आज अलग–अलग कानूनी मामलों, जेल और हादसों के कारण चर्चा में हैं। उमेश पाल हत्याकांड के बाद परिवार के लगभग सभी सदस्य पुलिस और जांच एजेंसियों के रडार पर आए। चकिया से स्कूल जाने वाले अतीक के पांचों बेटे अलग–अलग रास्तों पर चले गए। एक की मुठभेड़ में मौत हुई। दो जेल में हैं। दो छोटे बेटों को परिवार और कानूनी परिस्थितियों के बीच अपना जीवन आगे बढ़ाना पड़ा। पिछले तीन वर्षों में अतीक परिवार की कहानी लगातार बड़े घटनाक्रमों से जुड़ी रही है। अतीक की पत्नी शाइस्ता भी फरार है। उस पर पुलिस ने 50 हजार का इनाम घोषित किया है।

उमर अहमदः सबसे बड़ा बेटा, लखनऊ जेल में बंद

अतीक का सबसे बड़ा बेटा उमर अहमद शुरुआती दौर में पढ़ाई में तेज बताया जाता था। परिवार के अनुसार, वह आईएएस बनने की बात करता था। बाद में उसने कानून की पढ़ाई की। उमर का नाम कारोबारी से जुड़े एक मामले में सामने आया। उस पर अपहरण, मारपीट और रंगदारी जैसे आरोप लगे। सीबीआई ने भी मामले की जांच की। वर्तमान में उमर लखनऊ जेल में बंद है। उमेश पाल हत्याकांड के बाद अतीक परिवार पर कार्रवाई तेज हुई तो उमर भी जांच के दायरे में आया।

अली अहमदः दूसरा बेटा, झांसी जेल में निरुद्ध

अतीक का दूसरा बेटा अली है। उसका नाम भी कई आपराधिक मामलों में सामने आया। अली के खिलाफ रंगदारी और धमकी समेत गंभीर धाराओं में प्राथमिकी दर्ज हैं। उमेश पाल हत्याकांड के बाद पुलिस की कार्रवाई में अली भी घिरा। वर्तमान में वह झांसी जेल में बंद है। आबान की मौत के बाद उसके पैरोल पर बाहर आने की चर्चा शुरू हुई है।

असद अहमदः तीसरा बेटा, झांसी में एसटीएफ मुठभेड़ में जान गई

अतीक का तीसरे नंबर का बेटा असद था। उमेश पाल हत्याकांड के बाद उसका नाम सबसे ज्यादा चर्चा में आया। पुलिस के अनुसार, असद इस मामले में वांछित था। 13 अप्रैल 2023 को झांसी में एसटीएफ से हुई मुठभेड़ में असद और शूटर गुलाम मारे गए थे। असद की मौत के दो दिन बाद 15 अप्रैल 2023 को प्रयागराज में पुलिस अभिरक्षा के दौरान अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की हत्या कर दी गई थी।

अहजम अहमदः चौथा बेटा, परिवार में बाहर मौजूद सदस्य

अहजम अतीक का चौथे नंबर का बेटा है। उमेश पाल हत्याकांड के बाद उसे और उसके छोटे भाई आबान को पुलिस ने चकिया इलाके में पकड़ लिया था। दोनों नाबालिग होने के कारण बाल संरक्षण गृह भेजे गए थे। करीब सात महीने तक वहां रहे। बाद में न्यायालय के आदेश पर दोनों को उनकी बुआ परवीन कुरैशी की देखरेख में सौंप दिया गया। अहजम फिलहाल परिवार के बाहर मौजूद सदस्यों में शामिल है और पढ़ाई कर रहा है।

आबानः सबसे छोटा बेटा, रील से चर्चा में आया, हादसे में मौत

आबान अतीक का सबसे छोटा बेटा था। उमेश पाल हत्याकांड के बाद उसे भी बाल संरक्षण गृह भेजा गया था। बाल गृह से बाहर आने के बाद वह बुआ के घर हटवा में रहा। सितंबर 2025 में वह नैनी जेल में बंद भाई अली से मुलाकात के दौरान चर्चा में आया। इसके बाद नवंबर 2025 में सोशल मीडिया पर वायरल हुई एक रील को लेकर धूमनगंज थाने में उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई। छह अगस्त को झांसी में सड़क हादसे में उसकी मौत हो गई।

भाई अबान की मिट्टी में शामिल होने के लिए अली और उमर को मिली पैरोल, हाईकोर्ट ने दिया आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भाई अबान अहमद की मिट्टी में शामिल होने के लिए जेल में बंद अली अहमद और उमर अहमद को पैरोल पर रिहा करने का आदेश दिया है। शनिवार को बुआ परवीन कुरैशी की याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने यह आदेश जारी किया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भाई अबान अहमद की मिट्टी में शामिल होने के लिए जेल में बंद अली अहमद और उमर अहमद को पैरोल पर रिहा करने का आदेश दिया है। शुक्रवार को बुआ परवीन कुरैशी की याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने यह आदेश जारी किया है।

यह आदेश न्यायमूर्ति अजय भनोट और न्यायमूर्ति दिवेश चंद्र समंत ने दिया है। एक घंटे तक दोनों अपने छोटे भाई और परवीन कुरैशी से मिल सकेंगे। प्रशासन व्यवस्था करेगा। इसके बाद दोनों को सुरक्षित जेल पहुंचाएंगे। बता दें कि अली अहमद झांसी और उमर अहमद लखनऊ की जेल में बंद है।

हाईकोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा कि यदि दोनों भाई अपने दिवंगत भाई को अंतिम श्रद्धांजलि देना चाहते हैं और परिवार के साथ सीमित समय बिताना चाहते हैं तो इसमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अदालत ने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था राज्य की जिम्मेदारी है। न्यायालय ने यह भी कहा कि वे जहां आवश्यक हो, वहीं नमाज अदा कर सकते हैं और प्रशासन को सभी आवश्यक सुरक्षा इंतजाम करने होंगे।

सुनवाई के दौरान अली अहमद झांसी जेल से और उमर अहमद लखनऊ से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पेश हुए। प्रारंभ में झांसी जेल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में तकनीकी दिक्कत आने पर अदालत ने नाराजगी जताई। न्यायालय ने कहा कि केवल आवाज आ रही है, वीडियो क्यों नहीं दिखाई दे रहा है। इसके बाद तकनीकी समस्या दूर करने के निर्देश दिए गए और सुनवाई आगे बढ़ी।

अबान अहमद सड़क हादसे में हो गई है मौत

अली अहमद ने अदालत को बताया कि वह अपने दिवंगत भाई को अंतिम विदाई देना चाहते हैं और परिवार के साथ कुछ समय बिताना चाहते हैं। इस पर अदालत ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए आवश्यक शर्तों के साथ पैरोल मंजूर कर ली। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि पैरोल अवधि के दौरान दोनों भाइयों की गतिविधियां अदालत की शर्तों के अनुरूप रहेंगी और पूरी अवधि में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था लागू रहेगी।

बताया गया कि अबान अहमद की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। उनका अंतिम संस्कार प्रयागराज के चकिया, खुल्दाबाद स्थित कब्रिस्तान में किया जाएगा। हाईकोर्ट के आदेश के बाद अली और उमर अहमद पुलिस सुरक्षा के बीच अंतिम संस्कार में शामिल हो सकेंगे।

अदालत ने अपने आदेश में दोहराया कि पैरोल के दौरान सुरक्षा में किसी भी प्रकार की चूक नहीं होनी चाहिए और प्रशासन यह सुनिश्चित करे कि न्यायालय द्वारा निर्धारित सभी शर्तों का पूरी तरह पालन कराया जाए।

उमर ने कहा– अली हिम्मत रखो, कल मुलाकात होगी, मीडिया कुछ भी बुलवाए तो बोलना मत

इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान माफिया अतीक के दोनों बेटे अली और उमर कांफ्रेंसिंग के माध्यम से कोर्ट में पेश हुए। वीडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान लखनऊ जेल में बंद उमर ने भाई अली से कहा कि, अली हिम्मत रखो, कल मुलाकात होगी। मीडिया कुछ भी बुलवाए तो बोलना मत। कोर्ट ने आठ अगस्त शनिवार को दोनों को भाई अबान की मिट्टी के बाद या पहले एक–एक घंटे परिवार के साथ समय व्यतीत करने की शर्त पर पेरोल दी है।

केपी कॉलेज मैदान पर ही छात्रों से संवाद करेंगे राहुल, कायस्थ पाठशाला ने दी मंजूरी

प्रयागराज। राहुल गांधी का कार्यक्रम 'छात्रों की गूंज' केपी इंटर कॉलेज मैदान पर ही होगा। आठ अगस्त को प्रस्तावित इस कार्यक्रम के लिए कायस्थ पाठशाला (केपी) ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह ने कुछ प्रतिबंधों के साथ अपनी मंजूरी दे दी है। राहुल गांधी का कार्यक्रम 'छात्रों की गूंज' केपी इंटर कॉलेज मैदान पर ही होगा। आठ अगस्त को प्रस्तावित इस कार्यक्रम के लिए कायस्थ पाठशाला (केपी) ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह ने कुछ प्रतिबंधों के साथ अपनी मंजूरी दे दी है। वहीं, राहुल गांधी का प्रोटोकॉल भी जारी हो गया है। केपी ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष की ओर से हाईकोर्ट के एक आदेश का हवाला देकर आयोजन स्थल के लिए पूर्व में दी गई अनुमति को निरस्त किए जाने से कांग्रेस में खलबली मच गई थी। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय, सांसद उज्ज्वल रमण सिंह, विधायक वीरेंद्र चौधरी, राहुल गांधी की केंद्रीय टीम के

सदस्य बी. बैजू समेत कई वरिष्ठ नेता बृहस्पतिवार को दिनभर इसी मशक्कत में लगे रहे कि किसी तरह कार्यक्रम के आयोजन को मंजूरी मिल जाए। दोपहर में इन नेताओं ने जिलाधिकारी कैंप कार्यालय में डीएम मनीष कुमार वर्मा और अपर पुलिस आयुक्त डॉ. अजय पाल शर्मा के साथ बैठक की जिसके बाद एक प्रेस वार्ता में प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि प्रशासन ने कार्यक्रम के लिए अपनी सहमति तो दे दी है लेकिन अनुमति मिलने का इंतजार है। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष ने चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह से उनके आवास पर मुलाकात की। इस दौरान केपी ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए विधिक सलाह ली। चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष की ओर से लिखित में दिया गया है कि कार्यक्रम हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन में कुछ प्रतिबंधों के साथ आयोजित किया जाएगा। इसी आधार पर उन्हें कार्यक्रम स्थल की मंजूरी इस शर्त पर दी गई है कि इसके लिए पहले जिलाधिकारी से अनुमति लेंगे।

प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बताया कि राहुल गांधी के कार्यक्रम का प्रोटोकॉल जारी हो गया है। राहुल गांधी दोपहर 2.00 बजे दिल्ली से प्रस्थान कर 3रू15 बजे प्रयागराज पहुंचेंगे और अपराह्न 3रू30 से 5रू30 बजे तक आनंद भवन/स्वराज भवन में विश्राम के बाद शाम 6रू00 से 8रू30 बजे तक केपी कॉलेज ग्राउंड में छात्रों के बीच रहेंगे। इसके बाद रात 9रू30 बजे दिल्ली के लिए उड़ान भरेंगे। प्रदेश अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि यह कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है और इसमें किसी पार्टी का झंडा या राजनीतिक गतिविधियां नहीं होंगी बल्कि केवल छात्रों के मुद्दों की बात होगी। प्रशासन को समय से सूचना दे दी गई है और यह संवाद तय समय पर मजबूती से संपन्न होगा। इस मौके पर राष्ट्रीय सचिव वीपी सिंह, शहर अध्यक्ष फुजैल हाशमी, प्रवक्ता संजीव सिंह, हसीब अहमद, कोषाध्यक्ष शिव पांडेय समेत शेखर बहुगुणा, हरिकेश त्रिपाठी, किशोर वार्ष्णेय, सुधाकर तिवारी आदि मौजूद रहे।

कांग्रेस के कई बड़े नेता पहुंचे प्रयागराज

राहुल गांधी के कार्यक्रम के लिए कांग्रेस के कई बड़े नेता बृहस्पतिवार को प्रयागराज पहुंचे। कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के ओबीसी विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जय हिंद, युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु छिब, एनएसयुआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनोद जाखड़, सेवा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एसबी श्रीनिवासन, यूपी कांग्रेस सोशल मीडिया इंचार्ज शालनी सिंह, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अजय लल्लू समेत यूपी में कांग्रेस के सभी सांसद भी शामिल हैं।

प्रदेश अध्यक्ष ने दिए ये आश्वासन– हम आपके खेल मैदान एवं प्रांगण की पूरी सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे

हम उतने ही हिस्से का प्रयोग करेंगे जिससे छात्रों से संबंधित खेलकूद में व्यवधान न पड़े

हम इलाहाबाद उच्च न्यायालय या किसी भी न्यायालय के आदेश की अवहेलना नहीं करेंगे, तैयार के दौरान खेल के मैदान को नुकसान हुआ तो उसे ठीक कराएंगे

इस आश्वासन के बाद मैदान हमें मिल जाएगा। आज हम पूर्व में दिए गए अपने पत्र को वापस लेते हैं और संस्था से किसी भी प्रकार के मुआवजे की बात को वापस लेते हैं

राहुल गांधी के प्रयागराज आने का नहीं पड़ेगा प्रभाव, फिर बनेगी भाजपा की सरकार

प्रयागराज। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के प्रयागराज आने का कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। उनका खाता तक नहीं खुलेगा। वह कई बार प्रयागराज आ चुके हैं लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के प्रयागराज आने का कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। उनका खाता तक नहीं खुलेगा। वह कई बार प्रयागराज आ चुके हैं लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। युवा, किसान, छात्र और महिलाएं सभी वर्ग भाजपा के साथ हैं। भाजपा सबका साथ सबका विकास के सिद्धांत पर काम करती है। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश में फिर भाजपा की सरकार बनने जा रही है। कहा कि कांग्रेस का आरोप गलत है कि सरकार ने राहुल गांधी के कार्यक्रम की अनुमति में बाधा डाली या निरस्त कराया। राहुल कई बार प्रयागराज आ चुके हैं।

राहुल गांधी पर डिप्टी सीएम ने साधा निशाना

केशव ने राहुल गांधी के प्रयागराज दौरे पर कहा कि उन्होंने पहले अपना कार्यक्रम स्थगित किया था। अब यदि वे आ रहे हैं तो यह उनका राजनीतिक निर्णय है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी पहले भी अनेक बार प्रयागराज आ चुके हैं, लेकिन उनके आने का कोई राजनीतिक प्रभाव नहीं पड़ा। पूरे प्रयागराज जनपद ही नहीं, आसपास के क्षेत्रों में भी कांग्रेस का जनाधार लगातार कमजोर रहा है और चुनावी परिणाम इसका प्रमाण हैं। भाजपा जनता की सेवा, विकास और सुशासन के एजेंडे पर कार्य कर रही है, जबकि विपक्ष के पास सकारात्मक मुद्दों का अभाव है। जनता अब केवल नारों और आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति नहीं, बल्कि विकास, पारदर्शिता और सुशासन की राजनीति को समर्थन दे रही है। डिप्टी सीएम ने कहा कि विपक्ष के कुछ नेताओं द्वारा की जाने वाली अनर्गल एवं अमर्यादित बयानबाज़ी का उत्तर जनता स्वयं लोकतांत्रिक तरीके से देती है। भारतीय जनता पार्टी ऐसे बयानों पर अनावश्यक प्रतिक्रिया देने के बजाय विकास और जनसेवा के अपने संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व पार्टी देश सेवा का कीर्तिमान स्थापित करेगी।

राहुल गांधी के आने से बीजेपी पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं-केशव

जनता के विश्वास के बल पर आगे बढ़ रही है बीजेपी

लखनऊ (संवाददाता) उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने प्रयागराज सर्किट हाउस में पत्रकार वार्ता करते हुए कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी के प्रयागराज अथवा उत्तर प्रदेश के किसी भी क्षेत्र में आने से भारतीय जनता पार्टी पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। उन्होंने कहा कि समाज के सभी चारों वर्ग भारतीय जनता पार्टी के साथ मजबूती से जुड़े हुए हैं और भाजपा निरंतर जनता के विश्वास के बल पर आगे बढ़ रही है।

श्री मौर्य ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में तथा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में ष्सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयासष् के मंत्र के साथ जो विकास कार्य किए जा रहे हैं, उनका व्यापक और सकारात्मक परिणाम पूरे देश और प्रदेश में दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि जनता का विश्वास लगातार भारतीय जनता पार्टी के प्रति मजबूत हुआ है और भाजपा चुनाव दर चुनाव नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है।श्री मौर्य ने राहुल गांधी के प्रयागराज दौरे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने पहले अपना कार्यक्रम स्थगित किया था। अब यदि वे आ रहे हैं तो यह उनका राजनीतिक निर्णय है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी पहले भी अनेक बार प्रयागराज आ चुके हैं, लेकिन उनके आने का कोई राजनीतिक प्रभाव नहीं पड़ा।

पूरे प्रयागराज ही नहीं, आसपास के क्षेत्रों में भी कांग्रेस का जनाधार लगातार कमजोर रहा है और चुनावी परिणाम इसका प्रमाण हैं। भारतीय जनता पार्टी जनता की सेवा, विकास और सुशासन के एजेंडे पर कार्य कर रही है, जबकि विपक्ष के पास सकारात्मक मुद्दों का अभाव है। जनता अब केवल नारों और आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति नहीं, बल्कि विकास, पारदर्शिता और सुशासन की राजनीति को समर्थन दे रही है।उपमुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष के कुछ नेताओं द्वारा की जाने वाली अनर्गल एवं अमर्यादित बयानबाजी का उत्तर जनता स्वयं लोकतांत्रिक तरीके से देती है। भारतीय जनता पार्टी ऐसे बयानों पर प्रतिक्रिया देने के बजाय विकास और जनसेवा के अपने संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है।श्री मौर्य ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश विकास, सुशासन और जनकल्याण के नए आयाम स्थापित करता रहेगा तथा आगामी समय में भी जनता का आशीर्वाद भारतीय जनता पार्टी को पहले की तरह मिलता रहेगा।

अलीगढ़ एवं गौरखपुर के संस्थानों के निर्माण से छात्र–छात्राओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे-जयवीर

लखनऊ (संवाददाता) स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैंनेजमेंट अलीगढ़ के उच्चीकृत,स्थापना हेतु 4946.87 लाख रूपये की लागत की योजना क्रियान्वित की जा रही है। संस्थान के निर्माण हो जाने के पश्चात प्रतिवर्ष लगभग 1700 ये अधिक युवक युवतियों को परास्नातक डिग्री, परास्नातक डिप्लोमा, स्नातक डिग्री, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट एवं कौशल विकास पाठयक्रमों को मिलाकर 17 प्रकार के कोर्सों में प्रशिक्षणप्रदान किया जाएगा। स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैंनेजमेंट गोरखपुर परिसर में छात्र–छात्राओं एवं स्टाफ से संबंधित आवास के निर्माण हेतु 4681.64 लागत की योजना क्रियान्वित की जा रही है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि केंद्रीयज पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित लघु अवधि के "कौशल विकास व हुनर से रोजगार तक कार्यक्रम" के अंतर्गत अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित कर कुशल बनाया जाएगा। गोरखपुर स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैंनेजमेंट से पूर्वांचल एवं प्रदेश के दूसरे हिस्सों से आए छात्र–छात्राओं को हॉस्टल आदि की सुविधा सुलभ हो जाने से पठन–पाठन में आसानी होगी। यहां से निकलने वाले छात्र–छात्राएं पर्यटन सहित विभिन्न सेवा क्षेत्रों से जुड़कर रोजगार पांएगे। राज्य सरकार पर्यटन के माध्यम से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कटिबद्ध है। इसी दृष्टिकोण से प्रदेश के समस्त जनपदों में सांस्कृतिक विरासत जुड़े स्थलों का सौंदर्यीकरण कर बुनियादी सुविधाएं बेहतर की जा रही है।

जालाल लखनवी को समझने के लिए जालाल फहमी एक अहम किताब : हकीम वसीम

लखनऊ (संवाददाता)। मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी (मानू) के लखनऊ कैंपस में डॉ. मोहम्मद सईद अख्तर की संपादित किताब जालाल फहमी (1910–2025) का लोकार्पण किया गया। इस मौके पर मौजूद वक्ताओं ने किताब की खूब सराहना करते हुए इसे जालाल लखनवी की शख्सियत और अदबी (साहित्यिक) खिदमात को समझने के लिए एक अहम दस्तावेज बताया। मुख्य अतिथि एवं सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन यूनानी मेडिसिन के पूर्व डिप्टी डायरेक्टर हकीम वसीम अहमद आजमी ने कहा कि इस किताब में साल 1910 से 2025 तक जालाल लखनवी पर लिखे गए ज्यादातर महत्वपूर्ण लेखों और शोध सामग्री को बड़ी मेहनत और खूबसूरती से एक जगह जमा किया गया है। उन्होंने कहा कि भविष्य में जालाल लखनवी पर काम करने वाले शोधार्थियों और लेखकों के लिए यह किताब एक बुनियादी संदर्भ बनेगी। उन्होंने कहा कि डॉ. उमैर मंजर की भूमिका और डॉ. मोहम्मद सईद अख्तर की विस्तृत प्रस्तावना ने इस किताब को और अधिक उपयोगी बना दिया है। उनके मुताबिक, किताब में जालाल लखनवी के बारे में साहित्यकारों, शोधकर्ताओं और आलोचकों की राय को व्यवस्थित ढंग से पेश किया गया है। हकीम आजमी ने बताया कि डॉ. मोहम्मद सईद अख्तर ने मानू, लखनऊ कैंपस से डॉ. उमैर मंजर के निर्देशन में मीर जामिन अली जालाल लखनवी की साहित्यिक सेवाओं का आलोचनात्मक अध्ययन विषय पर पीएचडी की है। इसलिए जालाल लखनवी के साहित्य पर उनकी गहरी पकड़ इस किताब में साफ दिखाई देती है। कैंपस प्रभारी प्रो. हुमा याकूब ने कहा कि इस तरह की अदबी और इल्मी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होती हैं। उन्होंने कहा कि कैंपस के शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने में पूर्व छात्रों का सहयोग हमेशा स्वागत योग्य है। डॉ. मुजाहिदुल इस्लाम ने कहा कि श्जालाल फहमीश केवल बिखरी हुई सामग्री का संग्रह नहीं, बल्कि जालाल लखनवी पर एक गंभीर और उपयोगी शोध है।

अमरमणि त्रिपाठी की राजनीतिक सक्रियता से डरा, मुख्यमंत्री से मधुमिता–सारा के परिवार ने लगाई सुरक्षा की गुहार

लखनऊ (संवाददाता)। राष्ट्रीय कवयित्री मधुमिता शुक्ला हत्याकांड के मुख्य दोषी पूर्व मंत्री अमरमणि त्रिपाठी की राजनीतिक सक्रियता बढ़ने से मधुमिता शुक्ला और अमरमणि के बेटे अमनमणि की पत्नी सारा सिंह का परिवार डरा हुआ है। मधुमिता की बहन निधि शुक्ला और सारा सिंह की मां सीमा सिंह ने शुक्रवार को प्रेसवार्ता कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से न्याय और सुरक्षा की मांग की। प्रेसवार्ता में निधि शुक्ला ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पूर्वांचल को मच्छर और माफिया मुक्त बनाने के संकल्प का हवाला देते हुए कहा कि सरकार को अपने इस वादे पर कायम रहना चाहिए। उन्होंने मांग की कि किसी भी माफिया को राजनीतिक संरक्षण न मिले और पीड़ित परिवारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। निधि शुक्ला ने कहा कि उनका मानना है कि अमरमणि त्रिपाठी जितने समय तक जेल में रहा, उसमें मीडिया की बड़ी भूमिका रही। उन्होंने कहा कि 2003 से शुरू हुई इस लड़ाई में उनका परिवार लगातार भय और दबाव के बीच न्याय के लिए संघर्ष करता रहा। कई बार डर और निराशा के बावजूद मीडिया के सहयोग से उन्होंने यह लड़ाई जारी रखी। निधि शुक्ला ने बताया कि मधुमिता हत्याकांड से जुड़े ऑन रिकॉर्ड और ऑफ रिकॉर्ड तथ्यों को उन्होंने एक किताब में संकलित किया है। श्मेरी बहन का कत्ल शीर्षक से लिखी गई यह पुस्तक अगले महीने प्रकाशित और विमोचित की जाएगी। उनका कहना है कि इसमें मामले से जुड़े कई ऐसे तथ्य शामिल हैं, जो अब तक सार्वजनिक नहीं हुए हैं।

35 आरोपी बरी कैसे हो गए,ऊना दलित कांड पर भड़कीं मायावती, गुजरात सरकार को दिया अल्टीमेटम

लखनऊ (संवाददाता)। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने गुजरात के ऊना में दलित की पिटाई के मामले में 35 आरोपियों के बरी होने पर राज्य सरकार पर दलितों के प्रति द्वेषपूर्ण रवैया और लापरवाही बरतने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अभी भी मौका है और सरकार को उच्च न्यायालय में प्रभावी पैरवी कर सभी दोषियों को कड़ी सजा दिलानी चाहिए। गुजरात के गिर सोमनाथ जिले के वेरावल स्थित विशेष न्यायालय ने इस वर्ष 16 मार्च को 2016 के चर्चित ऊना दलित पिटाई मामले में 5 लोगों को दोषी ठहराया था, जबकि 35 अन्य आरोपियों को बरी कर दिया था। इस मामले में मृत गाय की खाल उतार रहे 4 दलित युवकों की बेरहमी से पिटाई की गई थी। इस

घटना के बाद देशभर में व्यापक विरोध–प्रदर्शन हुए थे। मायावती ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट कर कहा कि गुजरात के गिर सोमनाथ जिले के ऊना में 2016 में दलितों पर हुए जघन्य अत्याचार के मामले में लगभग सभी अभियुक्तों को मार्च में स्थानीय न्यायालय द्वारा बरी किए जाने के फैसले को उच्च न्यायालय में चुनौती देने के लिए पीड़ित दलित परिवारों को आर्थिक सहित अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि यह विचलित करने वाली सच्चाई से खासकर बहुजन समाज के लोगों में गहरी चिंता का विषय है। मेरी चिंता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि मैं स्वयं पीड़ितों से मिलने गई थी और सच्चाई जानने के बाद मैंने राज्य सरकार से सभी दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की थी। बसपा प्रमुख ने कहा कि देशभर में भारी जनाक्रोश के बावजूद 40 में से 35 आरोपियों का मार्च में बरी हो जाना दलितों के प्रति सरकारी द्वेष तथा उनके हितों और सुरक्षा के प्रति लापरवाही एवं उदासीनता का ही परिणाम प्रतीत होता है। उन्होंने गुजरात सरकार से आग्रह करते हुए कहा कि अभी भी मौका है। सरकार अपनी गलती सुधारते हुए इस मामले में उच्च न्यायालय के समक्ष प्रभावी पैरवी करे, ताकि सभी दोषियों को कड़ी सजा मिल सके। इससे पीड़ितों को न्याय मिलेगा और समाज में ऐसा अपराध करने वालों के लिए कड़ा संदेश जाएगा। मायावती ने यह भी कहा कि राज्य सरकार पीड़ित परिवारों की संतुष्टि के अनुरूप सरकारी खर्च पर सक्षम अधिवक्ता उपलब्ध कराए। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में उनकी सरकार ने भी गरीबों को निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराने का वैधानिक प्रावधान किया था।

सपा के लिए ब्राह्मण सिर्फ वोट बैंक, ब्रजेश पाठक का अखिलेश यादव पर तीखा हमला

लखनऊ (संवाददाता)। यूपी के डिप्टी ब्रजेश पाठक ने समाजवादी पार्टी (सपा) के ब्राह्मण सम्मेलन और जनेश्वर मिश्र जयंती कार्यक्रम को लेकर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा ब्राह्मण समाज का सम्मान नहीं करती, बल्कि उसे केवल वोट बैंक के रूप में देखती है। शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (एक्स) पर जारी अपने बयान में डिप्टी सीएम ने कहा कि सपा को ब्राह्मणों की याद केवल चुनाव के समय आती है, जबकि सत्ता मिलने पर उसका लाभ केवल एक परिवार तक सीमित रहता है। ब्रजेश पाठक ने आरोप लगाया कि समाजवादी पार्टी आज भी अंग्रेजों की बांटो और राज करो की नीति पर चल रही है। उन्होंने कहा कि पार्टी को ब्राह्मण वोट के लिए छोटे लोहिया जनेश्वर मिश्र की याद आती है, लेकिन शासन करने के लिए केवल अपना परिवार दिखाई देता है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा, ब्राह्मण वोट देकर सत्ता दिलाएं और उस सत्ता पर सपा अपने परिवार की खड़ाऊं रखकर शासन करे, यही उसकी राजनीति बन गई है। डिप्टी सीएम ने कहा कि जनेश्वर मिश्र की जयंती उनके समाजवादी विचारों और व्यक्तित्व को लोगों तक पहुंचाने का अवसर होनी चाहिए थी, लेकिन कार्यक्रम में उनके विचारों की बजाय राजनीतिक आरोप–प्रत्यारोप और व्यक्तिगत हमले ज्यादा देखने को मिले। उन्होंने कहा कि इससे न केवल जनेश्वर मिश्र की विरासत का अपमान हुआ, बल्कि पूरे ब्राह्मण समाज की गरिमा भी आहत हुई। उन्होंने कहा, ष्मुझे जितनी गालियां देनी हों दीजिए, लेकिन ब्राह्मण समाज की गरिमा को ठेस मत पहुंचाइए। ब्रजेश पाठक ने आरोप लगाया कि मौजूदा समाजवादी पार्टी डॉ. राममनोहर लोहिया और जनेश्वर मिश्र के समाजवादी आदर्शों और राजनीतिक संस्कारों से पूरी तरह भटक चुकी है। उन्होंने कहा कि लोहिया और जनेश्वर मिश्र लोकतांत्रिक संवाद और सदन में सार्थक बहस के पक्षधर थे, जबकि आज की सपा संसद और विधानसभा में जनहित के मुद्दों पर चर्चा के बजाय हंगामा और अवरोध की राजनीति कर रही है। उपमुख्यमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि विपक्ष संविधान की प्रति हाथ में लेकर तस्वीरें तो खिंचवाता है, लेकिन संवैधानिक संस्थाओं और संसदीय परंपराओं का सम्मान नहीं करता। उन्होंने सपा नेताओं को सलाह दी कि वे समय–समय पर डॉ. लोहिया और जनेश्वर मिश्र के विचारों का अध्ययन करें। उनका दावा था कि नई समाजवादी पार्टी में समाजवाद, सामाजिक न्याय और समरसता का दर्शन दिखाई नहीं देता।

मंडल दिवस पर चंद्रशेखर ने कहा, बैलेट पेपर लाओ, लोकतंत्र बचाओ, ईवीएम हटाओ

लखनऊ (संवाददाता)। मंडल दिवस पर शुक्रवार को आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और नगीना सांसद एडवोकेट चंद्रशेखर आजाद राजधानी पहुंचे। वे ईको गार्डन में आयोजित 'मंडल चेतना जन आंदोलन' में शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रदेश के अलग–अलग जिलों से बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और समर्थक पहुंचे। चंद्रशेखर आजाद ने कहा, बैलेट पेपर लाओ, लोकतंत्र बचाओ, ईवीएम हटाओ। आगे उन्होंने कहा कि जहां–जहां आपका पसीना पड़ेगा वहां क्रांति के बीच उत्पन्न होंगे आप लोग धूप से मत घबराना। उन्होंने मंडल आयोग की शेष सिफारिशों को लागू करने, पिछड़े वर्गों को राजनीतिक आरक्षण देने और

समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की मांग उठाई। आंदोलन के माध्यम से पार्टी ने सरकार के सामने प्रमुख मांगें रखी हैं। इनमें मंडल आयोग की शेष सभी सिफारिशों को लागू करना, पिछड़े वर्गों को राजनीतिक आरक्षण देना और सामाजिक न्याय के साथ समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना शामिल है। मैं पूर्व प्रधानमंत्री बीपी सिंह जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। बीपी सिंह को भारत रत्न मिलना चाहिए मैं सरकार से मांग करता हूं। यह बहुत बड़ी लड़ाई है और हम इसको छोड़ने वाले नहीं हैं। जब तक मंडल कमीशन पूरी तरह से लागू नहीं होगा तब तक हम चौन से नहीं बैठेंगे। चन्द्रशेखर आजाद ने कहा जब मैं पूरे आंदोलन को पढ़ता हूं पता चलता है कि आज की जो संवैधानिक व्यवस्था है वह सब इन लोगों के संघर्षों की वजह से है आज इस देश को समता मूलक समाज बनाने के लिए यह आंदोलन तेजी से आगे बढ़ रहा है।मैं रामविलास पासवान और मान्यवर काशीराम जी को भी नहीं भूल सकता। आज के दिन पर मैं नमन करता हूं।

श्रेष्ठ वही है कर्म

(छप्पय)

श्रेष्ठ वही है कर्म निहित जिसमें हरि रहते।
भूल सदा निज लाभ सभी का हित हैं करते।
अहं भाव से दूर समर्पित सब में होकर।
करते हैं वह कृत्य लगे सर्वदा मनोहर।
सच्चाई का साथ दें निराकरण कर प्रश्न का।
सावन से संदर्भ ले अर्थ बताते जश्न का।।

हित– सुख और विकास साथ कल्याणी बाते।
हो जिसका उद्देश्य कर्म वह सबको भाते।
सृष्टि–संतुलन ध्यान सदा रख मन के अंदर।
देते ऐसा ज्ञान लौट आता मन्वंतर।
जैसे सावन–बोध सुखद पल देती जग को।
वैसे पावन कृत्य सुभग लगते हैं सबको।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

शहर समता विचार मंच की जबलपुर इकाई की ऑनलाइन काव्यगोष्ठी मित्रता दिवस के उपलक्ष्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न

जबलपुर। शहर समता विचार की जबलपुर इकाई द्वारा आयोजित ऑनलाइन काव्य गोष्ठी। रचना सक्सेना की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस काव्यगोष्ठी में डा. साधना शुक्ला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रही। सारस्वत अतिथि के रूप में कामना कौस्तुभ एवं विशिष्ट अतिथि छाया त्रिवेदी, डा.

राजलक्ष्मी शिवहरे, अर्चना मलैया काव्यगोष्ठी का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति कृष्णा राजपूत द्वारा। काव्य गोष्ठी का संयोजन अनीता दुबे एवं संचालन उमा मिश्रा प्रीति ने किया। इस काव्य गोष्ठी में मुकुल तिवारी, रचना सक्सेना जबलपुर, राजकुमारी रैकवार, शैली सेठ, आरती श्रीवास्तव प्रभाबच्चन, रेखा चौधरी, गायत्री चौबे, कृष्णा राजपूत, शशि कला सेन, मंजूषा, आरती श्रीवास्तव, रश्मि पांडे,कुमकुम शुक्ला, आरती शर्मा, चंद्र प्रकाश वैश्य, आशा श्रीवास्तव, अनुराधा गर्ग, चंदा देवी स्वर्णकार, रचनाकार बहनों ने सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चांद लगा दियें। धन्यवाद ज्ञापन छाया सक्सेना'प्रभुष ने किया।

आईटीआईः अभ्यर्थियों को संस्थान व ट्रेड विकल्प बदलने का मौका

लखनऊ (संवाददाता) राजकीय और निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में सत्र 2026–27 के प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों के लिए महत्वपूर्ण सूचना है। व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता विभाग ने अभ्यर्थियों को आवेदन पत्र में संस्थान और ट्रेड के विकल्प बदलने ,बढ़ाने का अवसर प्रदान किया है।व्यावसायिक शिक्षा विभाग के विशेष सचिव एवं एससीवीटी के अधिशासी निदेशक अभिषेक सिंह ने बताया,राज्य में आईटीआई में प्रवेश की ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया 11 जुलाई 2026 से जारी है। डीजीटी भारत सरकार से प्राप्त डायनेमिक सीट मैट्रिक्स के आधार पर पोर्टल पर सीटें प्रदर्शित की गई हैं। कुछ संस्थानों द्वारा पूर्व में मैप किए गए एनसीवीटी व्यवसायों की यूनिटों सीटों को अनमैप किए जाने के कारण एससीवीटी पाठ्यक्रम में परिवर्तित किया गया है, एससीवीटी पाठ्यक्रमों की सीटों में बढ़ोतरी हुई है। वहीं संस्थानों द्वारा छूटी हुई मैपिंग को पूरा करने से एनसीवीटी पाठ्यक्रमों में भी सीटें बढ़ी हैं।

खड़े ट्रक में एलएसए के डंपर ने टक्कर मारी,चालक केबिन में फंसा

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी के रिंग रोड पर शुक्रवार सुबह करीब 4.15 बजे लखनऊ स्वच्छता अभियान (एलएसए) के डंपर ने खड़े ट्रक में टक्कर मार दी। ट्रक चिलौली अंडरपास के ऊपर खड़ा था। पीछे से पहुंचे एलएसए के डंपर ने टक्कर मार दी थी। इस दुर्घटना में डंपर का ड्राइव केबिन में फंस गया। सूचना मिलने पर पुलिस, फायर सर्विस और एसडीआरएफ की टीमों ने मौके पर पहुंचकर कड़ी मशक्कत के बाद चालक को सुरक्षित बाहर निकाला और ट्रॉमा सेंटर भेजा। पुलिस ने बताया कि उन्हें एंबुलेंस से तुरंत अस्पताल भेजा गया, जहां उनका इलाज जारी है। इस हादसे के कारण रिंग रोड पर कुछ समय के लिए यातायात बाधित रहा। पुलिस ने क्षतिग्रस्त ट्रकों को सड़क से हटवाकर यातायात सामान्य कराया। अधिकारियों के अनुसार, दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि पीछे से आ रहे डंपर ने खड़े वाहन में टक्कर मारी थी। दुर्घटना की वास्तविक वजह जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट हो पाएगी। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

बाइक सवार बदमाशों ने झपटा मार डॉक्टर से चेन लूटी

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी के गुडंबा इलाके में शुक्रवार सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकले डॉक्टर से बाइक सवार दो बदमाश सोने की चेन लूट ले गए। वारदात जनता इंटर कॉलेज के पास सुबह करीब 6.15 बजे हुई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी। डॉक्टर ने बदमाशों का पीछा करने का प्रयास किया, लेकिन वे तेज रफ्तार बाइक से भाग निकले।

सम्पादकीय.......

मोदी-शाह की अनुपस्थिति चिंतनीय

संसद के जारी मानसून सत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके बाद सबसे प्रभावशाली गृह मंत्री अमित शाह की लगातार गैरमौजूदगी चिंतनीय है। जिसके कारण देश के समक्ष अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा नहीं हो पा रही। उनकी अनुपस्थिति के चलते लोकसभा तथा राज्यसभा दोनों ही सदनों में गतिरोधा है। यह भी एक विडंबना है कि जहां एक तरफ संसद में अहम मसलों पर चर्चा नहीं हो रही है, वहीं तकरीबन हर रोज दोनों सदनों में हो रहे शोर–शराबे का लाभ उठाकर सरकार चालाकी से शासकीय विधेयक पारित कर रही है। यह संसदीय परम्परा के विपरीत है कि जिन मुद्दों पर प्रतिपक्ष चर्चा चाहता है, उसे सत्ता पक्ष चालाकीपूर्वक टाल रहा है और दूसरी ओर बिना बहस कराये अपनी मर्जी व आवश्यकता के विधेयकों को मंजूर कर कानून रूप दे रहा है। हालांकि भारतीय जनता पार्टी एवं उसके मित्र दलों के सहयोग से तीन बार बनी सरकारों का यही रवैया रहा है लेकिन आज भारत के सामने जो बेहद महत्वपूर्ण सवाल हैं, उन्हें टालना किसी भी सूरत में लोकतंत्र के हित में नहीं है। यह सीधे–सीधे सरकार का जवाबदेही से मुकरना है। 20 जुलाई से 13 अगस्त तक के लिये तय इस सत्र के दौरान उम्मीद थी कि सरकार जंतर–मंतर पर हुए युवाओं एवं छात्रों के प्रदर्शन और उसके पुलिसिया दमन पर सरकार जवाब देगी। यह प्रदर्शन मई में नीट परीक्षा के रद्द हो जाने के खिलाफ हुआ था। परीक्षा रद्द होने के चलते देश भर में 20 से अधिक छात्र–छात्राओं ने आत्महत्या कर ली। करीब डेढ़ माह चले धरना–प्रदर्शन में शामिल लोग 20 जुलाई को संसद की ओर मार्च करना चाहते थे। उन्हें रोकने के लिये प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने बड़े पैमाने पर बल प्रयोग किया था। शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे के बाद प्रदर्शन तो बंद हो गया पर प्रदर्शन स्थल पर युवाओं व छात्र–छात्राओं के साथ हुई पुलिस बर्बरता से लोगों में रोष है। केन्द्र सरकार के वादे के विपरीत बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया गया है। कील लगी लाठियां और सादे कपड़ों में पुलिस के साथ ऐसे लोगों ने छात्रों–युवाओं पर कहर बरपाया था जिनके बारे में आरोप है कि वे भाजपा तथा उसके समर्थित संगठनों के कार्यकर्ता थे। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पैलेट गन से घायल युवक को मीडिया के सामने पेश किया तथा प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे युवाओं से भी तस्दीक कराई कि प्रदर्शनकारियों के साथ बर्बरता हुई। संसद के बाहर और भीतर राहुल गांधी सवाल उठा रहे हैं कि प्रदर्शन में शामिल युवाओं का दमन करने का आदेश किसने दिया? उनके अनुसार गृह मंत्री होने के नाते अमित शाह इसके लिये जिम्मेदार हैं और अगर वे कहते हैं कि उन्हें जानकारी नहीं है कि यह किसके आदेश पर हुआ तो उसका अर्थ है कि वे अयोग्य हैं। दोनों ही मामलों में शाह की जवाबदेही है और उन्हें सदन में आकर जवाब देना चाहिये। पूरा विपक्ष चाहता है कि इस गम्भीर मामले में गृह मंत्री के साथ प्रधानमंत्री को भी संसद में चर्चा कराकर जनता को संतुष्ट करना चाहिये। उन्हें सदनों में आकर उत्तर देने के लिये रोज ही संसद परिसर में विपक्ष द्वारा प्रदर्शन और नारेबाजी की जा रही है। बुधवार को तो समूचे विपक्ष ने मकर द्वार से गांधी प्रतिमा तक मार्च भी निकाला, ताकि सरकार पर दबाव बने। इधर यह मामला अब सुप्रीम कोर्ट में भी है, जहां छात्रों पर पुलिस के दमन से जुड़ी याचिकाओं की सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि हिंसक प्रतिक्रिया कभी समाधान नहीं हो सकती, बल्कि इससे स्थिति और बिगड़ती है। उन्होंने कहा, सबसे बड़ी ताकत लोगों की बात सुनना है। यह समझना जरूरी है कि वे क्या कह रहे हैं और किस वजह से आंदोलन कर रहे हैं। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि शक्तिशाली राज्य की ओर से अत्यधिक सख्ती बरतने से स्थिति और बिगड़ सकती है। उन्होंने कहा कि मामलों को वापस लेने का निर्णय संभवतरू इसी सोच के साथ लिया गया होगा। उन्होंने कहा, श्ये युवा हैं। इन्हें उचित सलाह और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। राज्य की ओर से अनावश्यक आक्रामकता स्थिति को और हिंसक बना सकती है। इससे बचना जरूरी है।

सुप्रीम कोर्ट भी मान रहा है कि आक्रामकता अनावश्यक है। वैसे नीट तथा सीजेपी के उपरोक्त प्रदर्शन के अलावा कई और ऐसे मुद्दे हैं जिन पर देश की सबसे बड़ी पंचायत में सरकार को जवाब देना चाहिये। अयोध्या के राममंदिर में चंदा चोरी का मामला, एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल–डीजल की बिक्री, कानून–व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति, असम की बाढ़, ऑपरेशन सिंदूर के मामले में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा शहीदों की संख्या को लेकर संसद के पिछले एक सत्र में झूठ बोलना (बताया गया था कि कोई नुकसान नहीं हुआ पर हाल ही में स्वयं सरकार ने बताया है कि देश के 6 जवान शहीद हुए) आदि। संसद सत्र से अनुपस्थित रहने का मोदी का पहले से रिकॉर्ड रहा है। उनके 12 वर्षीय कार्यकाल में अनेक ऐसे अवसर आये जब वे संसदीय बैठकों में उपस्थित रहने की बजाय कभी विदेश यात्रा पर निकल गये थे या चुनावी रैलियों को सम्बोधित करते रहे अथवा रोड शो कर रहे थे। खासकर राहुल गांधी सदन में आते हैं ।

क्या प्रश्नपत्र लीक विरोधी कानून पारित होने से भाजपा छात्रों का भरोसा जीत सकेगी

कल्याणी शंकर

भारत में राजनीतिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने इतिहास के एक अहम मोड़ का सामना कर रही है। उसे यह सोचने की जरूरत है कि जेन जेड को कैसे जोड़ा जाए। मौजूदा मोदी सरकार को जेन जेड के साथ जूझना पड़ा, जिसने एक अचानक आंदोलन शुरू कर दिया जिससे सरकार हैरान रह गई। यह ग्रुप आर्थिक और राजनीतिक घटनाओं की वजह से बदला है। नए प्रश्नपत्र लीक विरोधी कानून का मकसद परीक्षा सम्बंधी सरकारी कामों में पारदर्शिता को बेहतर बनाना है। जेनरेशन जेड को भुला दी गयी पीढ़ी या बड़े बेबी बूमर और मिलेनियल ग्रुप के श्बीच का बच्चाश बताया गया है। इस पीढ़ी की खासियत आजादी, व्यावहारिक सोच और पहले से मौजूद संस्थाओं के प्रति शक की एक अलग भावना है। जेनरेशन जेड ने आर्थिक मंदी, इंटरनेट का आना और जारूरी राजनीतिक बदलावों सहित देश और दुनिया भर में कई अहम घटनाओं का अनुभव किया है। इस ग्रुप के कई लोगों को हाल के सालों में रोजगार बाजार में मुश्किलों का सामना करना पड़ा और वे उदारीकरण नीति के असर से प्रभावित हुए, जिससे मौके और अनिश्चितता दोनों मिले। यह पीढ़ी असलियत और व्यावहारिकता को महत्व देती है, और खोखले वादों के बजाय असली फायदों पर ध्यान देती है। जेनरेशन जेड के लिए, इसका मतलब है कि वे ध्यान से देखेंगे कि प्रश्नपत्र लीक विरोधी कानून असली जिंदगी पर कैसे असर डालता है। उनका समर्थन पाने के लिए, यह साफ तौर पर बताना जारूरी है कि कानून का मकसद क्या है और यह लोगों की सुरक्षा कैसे करता है। पिछले हफ्ते, संसद ने राष्ट्रीय और जनता की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकने वाली लीक को रोकने के लिए लीक विरोधी विधेयक पारित किया। इसकी मिली–जुली समीक्षा हुई। यह इस बारे में जरूरी सवाल उठाता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यक्तिगत आजादी के बीच कैसे संतुलन बनाया जाए। आलोचकों का मानना है कि संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा जारूरी है, लेकिन विधेयक का गलत इस्तेमाल भी हो सकता है। उन्हें चिंता है कि यह बोलने की आजादी जैसी आजादी को कमजोर कर सकता है और अलग–अलग नजरियों के लिए जगह कम कर सकता है। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि प्रश्नपत्र लीक विरोधी विधेयक परीक्षाओं में जानकारी लीक होने से रोकने के लिए बनाया गया था। ये चिंताएं जेनरेशन जेड के लिए बहुत जरूरी हैं, जो सरकार में जवाबदेही और पारदर्शिता को महत्व देते हैं। कई जेन जेड छात्र इस कानून को पिछली सरकारी कार्रवाइयों का दोहराना मात्र मानते हैं, जहां सुरक्षा के लिए बने कानूनों का इस्तेमाल असहमति को दबाने के लिए किया गया था। वे जाहिर तौर पर सावधान और शक करने वाले हैं।

जेन जेड को वापस जीतने के लिए भाजपा को एक साफ रणनीति की जरूरत है। ऐसी रणनीति में नीति को बढ़ावा देने या गारंटी वाले नतीजों को सामने लाने से कहीं ज्यादा कुछ होना चाहिए। इस लक्ष्य को पाने में कई और तरीके मदद कर सकते हैं। पहला, टाउन हॉल और सोशल मीडिया के जरिए जेनरेशन जेड के साथ असली जुड़ाव उन्हें सम्मान और फैसले लेने की प्रक्रिया में शामिल महसूस करा सकता है, जिससे सत्ताधारी पार्टी के साथ उनका सम्पर्क मजबूत होता है। दूसरा, आमने–सामने का जुड़ाव मतदाताओं के लिए समुदाय और पुष्टि की भावना को बढ़ावा देता है। साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म ज्यादा लोगों तक पहुंच बनाने में मदद कर सकते हैं, खासकर जेन जेड में से ज्यादा टेक–सैवी लोगों को अपील करते हुए। तीसरा, लीक विरोधी विधेयक के मकसद और सुरक्षात्मक उपायों को साफ तौर पर समझाकर पारदर्शिता को प्राथमिकता देने से जेनरेशन जेड को भरोसा महसूस हो सकता है और वे मोदी सरकार के उनके हितों के प्रति प्रतिबद्धता पर भरोसा कर सकते हैं। चौथा, इन्फोग्राफिक्स और पब्लिक बुलेटिन जैसे आसान फॉर्मेट में जानकारी शेयर करने से ऐसी पीढ़ी आकर्षित हो सकती है जो जल्दी और साफ जवाब चाहती है। इसके अलावा, चर्चा में विशेषज्ञों को शामिल करने से पार्टी की विश्वसनीयता मजबूत हो सकती है और यह दिखा सकती है कि यह सबको साथ लेकर चलने वाली और सुनने वाली पार्टी है। पांचवीं बात, भाजपा को उन क्षेत्रों में अपनी सफलताओं को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाना और प्रचारित करना चाहिए जो जेनरेशन जेड के मूल्यों से मेल खाते हैं। आर्थिक स्थिरता, रोजगार सृजन, दक्षता विकास पहल, और डिजिटल प्रशासन में सफलता, ये सभी ऐसे विषय हैं जो इस ग्रुप पर सकारात्मक असर डाल सकते हैं। छठी बात, ऐसे काम के लिए विकास की परियोजनाओं और नीतियों पर जोर देना, जिनका सीधा असर जेन जेड समूह की जिंदगी पर पड़ा है, उनकी भलाई के लिए पार्टी की प्रतिबद्धता को मजबूत करने में मदद कर सकता है। जेनरेशन जेड को व्यक्तिगत अधिकार की महत्ता के बारे में भरोसा दिलाना सबसे जरूरी है। भाजपा को यह बताना चाहिए कि प्रश्नपत्र लीक विरोधी कानून लोकतांत्रिक मूल्यों को कैसे बल प्रदान करता है। उन्हें मौजूद सुरक्षा उपाय दिखाने होंगे, यह बताना होगा कि स्वतंत्र निगरानी होगी, और यह प्रचार करना होगा कि लोगों के पास अपनी चिंताएं बताने के तरीके हैं। इससे इस शक करने वाले समूह के साथ भरोसे की कमी को कम करने में मदद मिल सकती है। सातवीं बात, नागरिक समाज को शामिल करके और शासन और नीति के बारे में चर्चा में अलग–अलग आवाजों को शामिल करके, भाजपा एक ऐसे लोकतांत्रिक फ्रेमवर्क में अपने निवेश को दिखा सकती है जो सामूहिक और व्यक्तिगत अधिकारों को महत्व देता है। भाजपा सम्पर्क अभियान, नीति पर चर्चा और शैक्षणिक अभियान के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर सकती है। आंकड़ों का विश्लेषण करके और सोशल मीडिया से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल करके, पार्टी अपने संदेश उन मुद्दों पर फोकस कर सकती है जो जेनरेशन जेड के लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। यह तरीका यह पक्का करने में मदद करेगा कि संवाद उनसे व्यक्तिगत स्तर पर जुड़े। कानून बना परन्तु भाजपा के लिए पीढ़ीगत भरोसा फिर से हासिल करना एक चुनौती है। यह पार्टी के लिए अपने नजरिए को बदलने और जवाबदेही व पारदर्शिता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने का एक मौका भी है। जेनरेशन जेड का भरोसा दोबारा जीतने के लिए लगातार कोशिशों की जरूरत होगी। ऐसा माहौल बनाना जरूरी है जिसमें पार्टी खुद को एक ऐसी प्रगतिशील पार्टी के तौर पर पेश कर सके जो सभी वर्गों, जिसमें श्जेनरेशन जेडश भी शामिल है, की आवाज को अहमियत देती हो। भारतीय राजनीति में श्जेनरेशन जेडश की अहम भूमिका है, इसलिए भाजपा को उनके बीच अपनी छवि बेहतर बनाने पर ध्यान देना होगा। साफ रणनीतियों और सच्चे जुड़ाव के जरिए भाजपा जेनरेशन जेड के साथ अपने रिश्ते मजबूत कर सकती है।

आप माफ करने वाले होते कौन हैं

सर्वमित्रा सुरजन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या तो इतने नादान हैं कि 12 साल देश की सत्ता और लगभग इतने ही वक्त तक गुजरात की सत्ता पर काबिज रहने के बावजूद जनता की नब्ज पकड़ना नहीं जानते हैं, या फिर वे इतने चालाक हैं कि जनभावना और आकांक्षाओं को समझने के बावजूद उन्हें उपेक्षित कर केवल वही करते हैं, जो उनके मन को भाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि रेडियो पर हर महीने के अंत में जनता से संवाद के नाम पर उनका जो कार्यक्रम चलता है, उसका नाम मन की बात ही रखा गया है। क्योंकि इसमें मोदी अपने मनमुताबिक बातें ही करते हैं, संवाद तो सिरे से गायब रहता है। अब इंस्टाग्राम का इस्तेमाल मोदी तथाकथित तौर पर युवा वर्ग से जुड़ने के लिए कर रहे हैं, मगर यह भी मन की बात का विस्तारित संस्करण ही लगता है। अभी 31 जुलाई की देर रात नरेन्द्र मोदी ने एक और इंस्टाग्राम रील अपलोड की थी। इसमें उन्होंने अभिभावक जैसा भाव अपनाते हुए उन युवा प्रदर्शनकारियों को श्माफश करने की मंशा जताई, जिन्होंने उनके और कथित तौर पर उनकी मां के खिलाफ गालियों का इस्तेमाल किया था। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारी श्गुमराह बच्चेश थे, जिन्हें सही रास्ता दिखाने की जरूरत थी। बेशक भाजपा के बहुत से नेता नरेन्द्र मोदी को माई–बाप सब समझते हैं, अमृता फड़नवीस ने तो उन्हें बाकायदा नए भारत का राष्ट्रपिता ही बता दिया था। लेकिन मोदी इस मुगालते में न रहें कि भाजपा नेता चापलूसी में आकर उन्हें जो उपाधि दे, वो सच ही हो। सच्चाई यही है कि नरेन्द्र मोदी इस देश के निर्वाचित प्रधानमंत्री हैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं। प्रधानमंत्री होने के नाते उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वे जनता की बात सुने, उसके सवालों का जवाब दें और अगर उसने नाराजगी में प्रधानमंत्री की आलोचना की तो उसे सहज स्वीकार भी करें। कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बिल्कुल सही सवाल पूछा है कि श्भारत के भविष्य्य को माफ करने का अधिकार प्रधानमंत्री को किसने दिया? उन्होंने कहा कि छात्र गंभीर पीड़ा झेल रहे हैं, उन्हें प्रधानमंत्री की माफी नहीं चाहिए। मोदी को खुद छात्रों से माफी मांगनी चाहिए। दिल्ली में एक कार्यक्रम में राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री, उनके सहयोगियों और आरएसएस की सोच के पीछे एक खतरनाक और विभाजनकारी विचार है। उनके अनुसार, यह विचार भारत की विविध पहचान, भाषाओं और इतिहास को महत्वहीन मानता है, जबकि भारत ऐसा कभी स्वीकार नहीं करेगा। राहुल गांधी ने कहा कि भारत इसी कारण सड़कों पर है और वे अपने–अपने तरीके से भारत की विविध संस्कृति, भाषाओं और इतिहास की रक्षा कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आरएसएस भारत का इतिहास नहीं बदल सकता और भारत अपने इतिहास को किसी के द्वारा भी रौंदे जाने को कभी स्वीकार नहीं करेगा। राहुल गांधी की बात की प्रतिध्वनि ही जंतर–मंतर से लेकर देश भर में हुए प्रदर्शन में दिखाई दी है। इस आंदोलन में भाजपा की विभाजनकारी राजनीति और आडंबरों की भी जमकर धज्जियां उड़ाई गईं। बेशक इसमें कुछ मौकों पर, कुछ लोगों से भाषा का स्तर गिरा है, लेकिन अब तक देश में ऐसा कानून तो बना नहीं है जिसमें अपशब्दों पर या किसी भी असभ्य टिप्पणी को आपराधिक कृत्य माना जाए। जब अनुराग ठाकुर ने गोली मारो... जैसा बेहूदा नारा मंच से लगाया था, तब भी दिल्ली उच्च न्यायालय ने मार्च 2022 में सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की थी कि यदि कोई बात मुस्कुराते हुए कही जाए, तो उसमें आपराधिक मंशा (अपराधा बोध) नहीं मानी जा सकती। फिर किस लिए प्रदर्शनकारियों पर इस बात के लिए मामले दर्ज किए गए कि उन्होंने नरेन्द्र मोदी के लिए टिप्पणियां कीं। प्रदर्शनकारियों ने तो न केवल हँसते हुए बल्कि नाचते–गाते भी नरेन्द्र मोदी को खूब सुनाया है। इसलिए सरकार को इन लोगों को सजा देने का कोई अधिकार नहीं है कि उन्होंने अपना गुस्सा असभ्य तरीके से जाहिर किया। नरेन्द्र मोदी युवा प्रदर्शनकारियों को बच्चा बता कर खुद को उच्च नैतिक आदर्शों वाला बताने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन प्रदर्शनकारियों को बच्चा कहना उनकी राजनीतिक समझ को कम करने का प्रयास करना है। दरअसल मोदी की माफ करने वाली रील इस विरोध–प्रदर्शन की गंभीरता को कम कर एक पारिवारिक ड्रामे में बदलने की कोशिश है, जो कई बार हम टीवी धारावाहिकों में देखा करते हैं। इस धारावाहिक को छह कड़ियों में बांटे तो पहले एपिसोड में मोदी गुस्से को लिंग के आधार पर चुन रहे हैं। हमारी बेटियों के अपशब्दों के इस्तेमाल पर सांस्कृतिक सदमे की बात वीडियो में है। उसी भीड़ में मौजूद पुरुषों द्वारा वैसी ही भाषा इस्तेमाल करने पर ऐसी कोई बात नहीं कही गई। दूसरे एपिसोड में पितृसत्तात्मक सोच को हावी करते हुए व्यक्ति की पहचान खत्म करने की कोशिश है। भटके हुए बच्चों, बेटियों, मार्गदर्शन की जरूरत है। यह भाषा विरोध–प्रदर्शन को बच्चों की परवरिश से जुड़ी समस्या में बदल देती है। उन्हें ऐसे लोगों के तौर पर पेश करती है जिन्हें नैतिक सुधार की जरूरत है, न कि ऐसे नागरिकों के तौर पर जो जायजा राजनीतिक मांग कर रहे हैं। इस माफीनामे के तीसरे एपिसोड में माफी का दिखावा और असलियत का अंतर देखा जा सकता है। एक तरफ माफी मांगने का सार्वजनिक दिखावा किया जा रहा था, तो दूसरी तरफ प्रदर्शनकारियों के घर के पते, फोन नंबर, काम की जगह की जानकारी और परिवार के सदस्यों के नाम भाजपा समर्थकों के जरिए सार्वजनिक किए जा रहे थे। मुंबई में हाथ से पुलिस वैन रोकने वाली प्रदर्शनकारी को धमकियां मिलीं, जिनकी शिकायत उसने साइबर सेल में की, जबकि नोएडा की एक बच्ची से वीडियो पर माफी मांगने का दबाव डाला गया और अब भी उसे ट्रोल करने का सिलसिला चल रहा है। तो एक तरफ मोदी वीडियो में बड़प्पन दिखाने का काम कर रहे हैं और दूसरी तरफ सरकारी कार्रवाई का तंत्र भी चल रहा है। चौथे एपिसोड में असल मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए बड़ी सुविधाजनक तरीके से शालीनता का सहारा लिया गया है। गाली–गलौज को असल मुद्दे से ज्यादा अहमियत देकर पूरी कहानी का रुख बदलने की कोशिश दिखाई दी। क्योंकि मोदी के वीडियो में पेपर लीक के आरोपों या शिक्षा मंत्री के रुख और बाद में उनके इस्तीफे का कहीं जिक्र नहीं है, जबकि यही असली मुद्दा था जिसकी वजह से लाखों लोग सड़क पर उतरने को मजबूर हुए और उन्होंने वो सारी प्रताड़ना झेली जिसके वे बिल्कुल हकदार नहीं थे। यहां संस्थागत जवाबदेही से बड़ा मुद्दा भाषा के इस्तेमाल को बनाया गया। इस वीडियो का पांचवां एपिसोड मोदी के व्यवहार और असलियत का फर्क बताता है। एक तरफ श्बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओश का नारा देश में आगे बढ़ाया गया और फिर श्देश की बेटियांश वाले मुहावरे से लेकर श्अगर दांत जीभ काट लें, तो भी हम उन्हें बाहर नहीं निकालतेश वाली बात कही गई। मोदी का यही पैटर्न रहा है, वे बार–बार देश को परिवार बताते हुए, खुद को नेक इरादों वाले, समझदार और सुधार करने वाले पिता या मुखिया के तौर पर पेश करते हैं। उनके नजरिए से देखें तो असहमति का मतलब गुमराह होना है, जिसके लिए उनके धैर्यपूर्ण मार्गदर्शन की जरूरत हो। और सबसे आखिरी छठे एपिसोड में यह दिखाया गया है कि श्माफीश देने का काम कौन करता है। वे खुद को उस सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर रहे हैं, जो माफ करने का हक रखता है, और जनता को प्रजा की तरह दिखाते हुए यह बता रहे हैं कि जनता को सीखना चाहिए। सीखने का मतलब मोदी के नजरिए को ही सही माना जाए। वीडियो न सिर्फ 'विरोध करने वालों की अपनी मर्जी' या भूमिका को खत्म करता है, बल्कि यह माहौल भी बनाता है कि जो लोग अभी भी नाराज हैं, वे किसी जायज सवाल को उठाने के बजाय नेता की उदारता को देखें और अपनी मांगों को हाशिए पर धकेल दें।

लघुकथा

मैं औरत हूँ

कड़ाके की ठंड थी। कई रातों से जागी सुमेधा रजाई में सिमटी ही थी कि कराहती आवाज़ सुनते ही गीला बिस्तर बदलने दौड़ पड़ी।

तभी उसके भीतर से आवाज़ उठी "अरे, यह क्या? सारी उम्र तू इसी तरह सबकी सेवा में बिता देगी। अपने को देख, अब तू भी बूढ़ी हो गई है। पहले बच्चों के गीले बिस्तर सुखाए, अब बूढ़े माँ-बाप के लिए।"

"चुप हो जा, मैं औरत हूँ।" बुदबुदाते हुए सुमेधा कल की आस में रजाई ओढ़कर आँखों से नींद भगाने में जुट गई।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

अमृतकाल के जाल में लोकतंत्र

विश्व विख्यात लोकतांत्रिक राष्ट्र भारत के वर्तमान परिदृश्य में गौर करें तो,यह प्रतीत होता है कि,क्या वस्तुतरू लोकतंत्र की गरिमा धूमिल हो रही है? अगर हां.....तो इन (75) वर्षों का विकास,कहां गया? और अगर ना.....तो आवाम इतनी बेचौन और निराश क्यों है?

जब (1947) में आजादी के बाद प्रथम बार सरकार बनी,तब पंडित नेहरू ने राष्ट्रीय एकता और सर्वसमावेशी प्रतिनिधित्व के लिए विपक्ष के दिग्गजों को भी कैबिनेट में जगह दी,जिसमें डॉ. भीमराव अंबेडकर(शेड्यूल कास्ट फेडरेशन) को कानून मंत्री और श्यामा प्रसाद मुखर्जी (हिंदू महासभा) उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई। उसके बाद (1975–77)में आपातकाल के दौरान लोकतंत्र पर काली घटा छाई, तथा उस समय भी इतने बेबुनियाद आरोप व प्रत्यारोप नहीं रहें। वैश्विक उदारीकरण के दौरान नरसिम्हा राव ने भारत को वैश्विक व्यापार से जोड़ने का पहल किया तो,विपक्ष में अपना हर संभव विरोध जता कर विपक्ष की अहम भूमिका निभाई। लालकृष्ण आडवाणी के रथ यात्रा के दौरान (23 अक्टूबर 1990)को जब तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के आदेश पर उन्हें गिरफ्तार किया गया,तब भी उन्हें बाइज्जत समस्तीपुर के सर्किट हाउस में ठहराया गया और उसके बाद सम्मान सहित उनके परिजनों से मिलवाया गया। तत्पश्चात के राजनैतिक दिनों में वाजपेई और मनमोहन के बीच तीखी नोक–झोक व स्वस्थ राजनैतिक बहस देखी गई।अब वर्तमान में नीट परीक्षा के अत्यंत गंभीर और असंतोष जनक मुद्दे पर, जब विपक्ष ने छात्रों के समर्थन में प्रदर्शन किया तो जिस अमानवीय, अनैतिक व जबरिया तरीके से विपक्ष के नेताओं को गिरफ्तार किया गया, जिसमे बहुतों को चोट लगी तथा कई को पुलिस ने आम आदमी से भी तुच्छ समझ कर घसीटते हुए,टाँग कर हिरासत में ले लिया,जो यक़ीनन भारत के लोकतंत्र पर प्रश्नचिन्ह है।

सरकार की नीतियों और विचारों का विरोध करने पर, राष्ट्रद्रोही का दर्जा मिल जाना तथा राहु और केतु की तरह प्रवर्तन निदेशालय और केंद्रीय जांच ब्यूरो को सक्रिय कर देना,मीडिया की एकतरफा रवैया और चरण बंदना इतनी की निष्पक्षता ही भूल जाना,तथा लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभा के अध्यक्षों पर सत्तापक्ष के लोगों को अधिक समय देने व उनकी बातों पर गौर करने का आरोप लगना,इन सबसे निसंदेह लोकतंत्र के मंगलमय भविष्य पर खतरा प्रतीत होता है। विश्व के अखबारों पर गौर करें तो,अनेकों बार भारत के लोकतंत्र व शासन–प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह उठ चुके हैं।

भारत के वर्तमान राजनीति में जिस प्रकार गायक को विधायक,अभिनेता को नेता,और नर्तकियों को मंत्री बनाया जा रहा है, संभवतः प्रतीत हो रहा है कि,कुछ ही दर्शकों में देश पर संगीत व नृत्य कलाकारों का राज होगा।भारत का लोकतांत्रिक अतीत इसलिए गौरवशाली रहा है, क्योंकि हमारे पास विद्वान, महान व संघर्षशील नेता रहे हैं। आज भारत की जनता को इस विषय पर चिंतन करने की विशेष जरूरत है, हमें अपने जन प्रतिनिधि का चयन उसके चरित्र और योग्यता को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए,जिससे अयोग्य लोग राजनीति से दूर हो सकें और निष्कर्षतः राजनीति का अपराधीकरण और अपराध का राजनीतिकरण होने से बचाया जा सकें।

जय हिन्द,जय भारत,जय लोकतंत्र।

लेखकः आशीष कुमार सैनी
पूर्वछात्रः– इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
जनपदः प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

दीपिका कक्कड़ ने क्यों अपनाया था इस्लाम ? साथ अभिनय करने वाली अभिनेत्री ने उठाया सच से पर्दा

अब तक दीपिका कक्कड़ के फैंस को लगता था कि उन्होंने अभिनेता शोएब इब्राहिम से निकाह करने के लिए इस्लाम धर्म अपना लिया था। लेकिन अभिनेत्री ने इस वजह से इस्लाम अपनाने का फैसला नहीं लिया था, इसके पीछे कुछ और ही कारण मौजूद था। इस बारे में हालिया एक इंटरव्यू में दीपिका कक्कड़ की को–एक्ट्रेस जयंती भाटिया ने काफी कुछ बताया। सीरियल 'ससुराल सिमर का' में दीपिका कक्कड़ और जयंती भाटिया ने साथ अभिनय किया था। हाल ही में सिद्धार्थ कन्नन के पॉडकास्ट में जयंती ने दीपिका के बारे में कहा, 'यह सभी जानते हैं कि दीपिका जो भी काम करती हैं, उसमें अपना 100 प्रतिशत देती हैं। जब वह शोएब के साथ रिश्ते में आईं, तो वह उस रिश्ते में भी अपना 100 प्रतिशत देना चाहती थीं। उसी दौरान मैंने उससे पूछा कि क्या उसने शादी की वजह से धर्म बदला था। तो दीपिका कक्कड़ ने मना किया।' जयंती भाटिया आगे कहती हैं, 'दीपिका कक्कड़ एक मुश्किल दौर से गुजर रही थी और एक बार वह अजमेर शरीफ गई। वहां उसे लगा कि वह ऐसा करना चाहती है और उन्होंने यही किया। शादी या किसी और वजह से यह फैसला नहीं लिया था। हो सकता है कि उसे अजमेर शरीफ जाकर हिम्मत मिली हो। दीपिका को दुआ करने से हिम्मत मिल रही थी तो उसने तय किया कि वह धर्म बदलना चाहेगी। यह पूरी तरह से उसकी अपनी पसंद है।' इन दिनों दीपिका कक्कड़ अपनी पर्सनल लाइफ में काफी व्यस्त हैं। वह बेटे रूहान की परवरिश कर रही हैं।

> जयंती भाटिया आगे कहती हैं, 'दीपिका कक्कड़ एक मुश्किल दौर से गुजर रही थी और एक बार वह अजमेर शरीफ गई। वहां उसे लगा कि वह ऐसा करना चाहती है और उन्होंने यही किया। शादी या किसी और वजह से यह फैसला नहीं लिया था।

साथ ही अपना एक यूट्यूब व्लॉग चौनल भी चलाती हैं। इसके जरिए अपनी जिंदगी की झलक दिखाती हैं। कुछ समय पहले उनको लीवर कैंसर हुआ था, जिसका समय रहते इलाज कर दिया गया।

एक्ट्रेस जिया शंकर ने शुरू किया अपने जीवन का नया सफर , बिजनेसमैन करण धानक संग की सगाई

बिग बॉस ओटीटी 2 से पहचान बनाने वाली अभिनेत्री जिया शंकर ने आखिरकार अपने रिश्ते पर लगी अटकलों को खत्म कर दिया है। लंबे समय से उनके और अमेरिका में रहने वाले बिजनेसमैन करण धानक के रिश्ते की चर्चाएं चल रही थीं। अब दोनों ने अपने रिश्ते को नया मुकाम देते हुए सगाई कर ली है। 5 अगस्त 2026 को जिया ने अपने इंस्टाग्राम पर एक भावुक पोस्ट शेयर कर अपनी इंगेजमेंट की खुशखबरी फैंस के साथ शेयर की है। कपल ने प्राकृतिक खूबसूरती और हरियाली से घिरे एक निजी समारोह में एक–दूसरे को अंगूठी पहनाई। जिया ने करण धनक के साथ अपनी रोमांटिक तस्वीरें पोस्ट कीं और उनके लिए एक प्यार भरा इमोशनल नोट भी लिखा है, जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं । लम्बे समय तक अपने रिश्ते को निजी रखने के बाद जिया शंकर ने आखिरकार अपने मंगेतर से फैंस को रूबरू करा दिया। अब तक उन्होंने न तो अपने पार्टनर की पहचान सार्वजनिक की थी और न ही उनकी तस्वीर शेयर की थी। सगाई की खुशखबरी के साथ जिया ने पहली बार अपने होने वाले जीवनसाथी का चेहरा दिखाया और पोस्ट में उनके आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट को भी टैग किया। पोस्ट के साथ जिया ने एक भावुक सन्देश भी लिखा। उन्होंने कहा, कहते हैं कि प्यार तब मिलता है, जब उसकी सबसे कम उम्मीद होती है। शायद यह बात सच है, लेकिन भगवान ने मुझे इस पल तक पहुंचने के लिए मेरे धैर्य की अच्छी–खासी परीक्षा ली। जिया शंकर ने सोशल मीडिया पर लिखा कि– शायद यह सच है कि प्यार तब मिलता है जब आप इसकी सबसे कम उम्मीद करते हैं, लेकिन यहां भगवान ने सच में मेरे सब्र का इम्तिहान लिया। यह आसान नहीं था, पर किसी तरह यह हो गया। हजारों मील दूर होने के बावजूद, तुमसे हुई हर बातचीत घर जैसा एहसास देती थी। यह सफर आसान नहीं था, लेकिन हमने हर दिन एक–दूसरे को चुना। तुमने मुझे वह प्यार दिया जिसका मैंने जिंदगी भर इंतजार किया था। मुश्किल दिनों में भी तुमने मुझे हंसाया। एयरपोर्ट पर विदाई के समय हर बार मुझे जरा कसकर गले लगाया, जैसे तुम्हारा दिल हजारों टुकड़ों में टूट रहा हो। हम दुनिया में कहीं भी हों – घर कोई जगह नहीं, बल्कि तुम ही थे। तुम्हारे साथ जिंदगी सच में एक एडवेंचर है और यह मेरी पसंदीदा रोमांटिक–कॉमेडी फिल्म जैसी है। मैं तुम्हारे साथ अपनी पूरी जिंदगी बिताने और तुम्हें वैसे ही प्यार करने का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं, जैसे तुमने हमेशा मुझे प्यार किया है। आई लव यू कारण आपको बता दें की इससे पहले जिया शंकर का नाम इन्फ्लुएंसर अभिषेक मल्हान के साथ जुड़ चुका है। हालांकि दोनों ने इस तरह की खबरों को खारिज कर दिया था।

`आवारापन 2' में फिर सुनाई देगा `तेरा मेरा रिश्ता'? मुस्तफा जाहिद से चल रही बात! फैंस को मिल सकता है सरप्राइज ?

इमरान हाशमी एक बार फिर 'आवारापन 2' में नजर आने वाले हैं। पहली फिल्म का गाना 'तेरा मेरा रिश्ता' काफी पॉपुलर हुआ था। अब खबर सामने आ रही है कि 'आवारापन 2' के मेकर्स मुस्तफा जाहिद से 'तेरा मेरा रिश्ता' गाने का नया वर्जन रिकॉर्ड कराने के लिए बातचीत कर रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुस्तफा जाहिद की प्रोड्यूसर मुकेश भट्ट और विशेष भट्ट से बात चल रही है। अगर सब कुछ फाइनल हो जाता है, तो इस हफ्ते दुबई में गाने की रिकॉर्डिंग भी हो सकती है। हालांकि, ये नया वर्जन फिल्म में नहीं दिखाया जाएगा, क्योंकि इससे सर्टिफिकेशन से जुड़ी दिक्कतें आ सकती हैं। बताया जा रहा है कि मेकर्स इस गाने को सिर्फ सोशल मीडिया प्रमोशन के लिए इस्तेमाल करने का प्लान बना रहे हैं। फिलहाल दोनों तरफ से फाइनल मंजूरी का इंतजार है। ये खबर ऐसे समय में सामने आई है जब 2016 के उरी हमले के बाद से बॉलीवुड में पाकिस्तानी कलाकारों के साथ काम करना लगभग बंद हो गया था। 2025 के पहलगाम हमले के बाद भी इस रुख को दोहराया गया था। 2007 में आई 'आवारापन' आज भी अपने इमोशनल स्टोरी और शानदार म्यूजिक के लिए याद की जाती है। खासकर तेरा मेरा रिश्ता गाना आज भी लोगों के दिलों में बसा हुआ है। ऐसे में 'आवारापन 2' को लेकर फैंस के बीच ये सवाल जरूर है कि क्या फिल्म में पुराने गानों की झलक देखने को मिलेगी या नहीं। अगर मुस्तफा जाहिद की वापसी होती है, तो ये हाल के समय में बहुत कम देखने को मिला है कि किसी पाकिस्तानी सिंगर ने हिंदी फिल्म के लिए गाना रिकॉर्ड किया हो– चाहे वो फिल्म में शामिल हो या सिर्फ प्रमोशन के लिए। फिल्म का म्यूजिक मिथून, जीत गांगुली, अमाल मलिक और अखिल सचदेवा ने दिया है, जबकि डायरेक्शन नितिन कक्कड़ कर रहे हैं। ये फिल्म 14 अगस्त को दुनियाभर में रिलीज होने वाली है।

मुंबई एयरपोर्ट पर नजर आए गोविंदा और रानी स्वर्णकर, क्या साथ कर रहे हैं फिल्म?

गोविंदा ने स्मार्ट कैजुअल ऑल–ब्लैक लुक कैरी किया था। उन्होंने ब्लैक जैकेट के साथ व्हाइट ओपन–कॉलर शर्ट पहनी थी, जिसे ट्राउजर और डार्क सनग्लासेस के साथ स्टाइल किया। वहीं, रानी स्वर्णकर ने एलिगेंट ऑल–व्हाइट आउटफिट पहना था और अपने लुक को स्टेटमेंट ईयररिंग्स के साथ पूरा किया। गोविंदा और रानी इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'रूपा' के प्रमोशन में बिजी हैं। ये फिल्म काफी समय बाद गोविंदा की वापसी भी मानी जा रही है। फिल्मों में वापसी को लेकर गोविंदा ने पहले कहा था कि लोगों का उन्हें बार–बार नजरअंदाज करना ही उन्हें और मजबूत बनाता गया। उन्होंने इसे किस्मत बताते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा नई शुरुआत में विश्वास रखा है और उम्मीद है कि 'रूपा' युवाओं से कनेक्ट करेगी। उन्होंने कहा, 'शायद किस्मत ही थी कि मुझे कई बार नजरअंदाज किया गया। लोग कहते थे कि अब वो फिल्मों में नहीं आएंगे, लेकिन मैंने हमेशा फिर से शुरुआत की। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि ये फिल्म वो हासिल करे जो मैंने सोचा है, कुछ ऐसा जो लोग सोच भी नहीं सकते और अपना जादू दिखाए।' गोविंदा ने आगे कहा, 'ये फिल्म खासकर युवाओं के लिए है। जब वो इसे थिएटर में देखेंगे, तो मुझे उम्मीद है कि ये उन्हें सपने देखने और उन पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करेगी। इससे ज्यादा मैं कोई आध्यात्मिक बात नहीं करूंगा।' गोविंदा आखिरी बार 2019 में आई फिल्म 'रंगीला राजा' में नजर आए थे, जिसमें उन्होंने डबल रोल निभाया था।

डायबिटीज के मरीज स्नैक्स में खा सकते हैं काजू, एक्सपर्ट ने बताए इतने सारे फायदे

डायबिटीज हो जाने या फिर ब्लड शुगर लेवल के स्थिर ना रहने की स्थिति में अक्सर हेल्दी खाने की सलाह दी जाती है। ऐसे में पेशेंट को बहुत सारे टेस्टी फूड्स को खाने से परहेज करना पड़ता है। ऐसे में उन्हें खाने के लिए क्या दिया जाए ये बड़ा सवाल है। हर दिन अगर एक जैसा खाना खाकर बोर हो चुके हैं। तो उन्हें टेस्ट और हेल्थ दोनों के लिए फायदेमंद काजू को स्नैक्स में दे सकते हैं। ये उनकी स्वीट एंड सॉल्टी क्रेविंग के लिए बिल्कुल परफेक्ट रहेंगे।

काजू डायबिटीक लोगों के लिए क्यों है हेल्दी

एक्सपर्ट का मानना है कि काजू में भले ही मोनोसेचेरेटेड फैट की मात्रा होती है। लेकिन इसमे कार्बोहाइड्रेट की मात्रा बहुत कम और फाइबर ज्यादा होता है। साथ ही इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स भी केवल 22 होता है। जिसकी वजह से इसे डायबिटीज की बीमारी में आसानी से खाया जा सकता है। काजू में मौजूद नेचुरल शुगर ब्लड सेल्स में शुगर के लेवल को धीरे–धीरे मेंटेन करती है। जिससे ब्लड शुगर लेवल तेजी से हाई नहीं होता और डायबिटीज के मरीजों को इसके जरूरी पोषक तत्व मिल जाते हैं।

डायबिटीज में कैसे खाएं काजू

हालांकि, बाकी नट्स की तरह ही काजू को खाने के मामले में थोड़ी सावधानी जरूरी है। काजू को हमेशा मॉडरेट लेवल में और हेल्दी फूड्स के कॉम्बिनेशन में खाएं। इससे ये काफी फायदेमंद होगा और ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करेगा। इसलिए डायबिटीज के मरीज आसानी से स्नैक्स में काजू को सीमित मात्रा में खा सकते हैं।

काजू खाने के हैं इतने सारे फायदे

काजू में काफी सारे न्यूट्रिशन मौजूद है। पोटैशियम, विटामिन ई, विटामिन बी6, फोलिक एसिड के साथ ही मैग्नीशियम और फाइबर की मात्रा भरपूर होती है। काजू उन लोगों के लिए भी हेल्दी ऑप्शन है जो कब्ज की समस्या से परेशान हैं। ये कॉन्स्टिपेशन की परेशानी दूर करने में हेल्प करता है। लेकिन इसे हमेशा सीमित मात्रा में ही खाना चाहिए।

दिनभर में कितने काजू खाना है सही

दिनभर में करीब 10 काजू तक खाना ठीक है। इससे ज्यादा मात्रा में काजू खाने से डाइजेशन पर असर पड़ता है और ज्यादा मात्रा से पेट में दर्द जैसी दिक्कत हो सकती है।

पनीर के शौकीन लोग जरूर ट्राई करें कश्मीरी लाल पनीर, बेहद टेस्टी है ये त्मबपचम

अगर आप रोज एक ही तरह से पनीर की सब्जी बनाते हैं और उसे खाकर अब बोर हो चुके हैं तो ट्राई करें ये कश्मीरी रेसिपी कश्मीरी लाल पनीर। प्रोटीन से भरपूर ये रेसिपी न सिर्फ खाने में बेहद टेस्टी है बल्कि बनने में भी बेहद आसान है। पनीर की इस सब्जी की ग्रेवी का रंग लाल होता है, जो देखने में बेहद अच्छा लगता है। आप इस सब्जी को रोटी और चावल, दोनों के साथ सर्व कर सकते हैं।

कश्मीरी लाल पनीर बनाने के लिए सामग्री–

–200 ग्राम पनीर
–4 बड़े चम्मच सरसों का तेल
–1 चम्मच जीरा
–(चम्मच हींग
–2 साबुत तेजपत्ता
–2 लौंग
–2 हरी इलायची
–1 इंच दालचीनी का टुकड़ा
–2 बड़े चम्मच कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर
–1 चम्मच पिसी हुई अदरक (सौंठ)
–2 चम्मच पिसी हुई सौंफ
–1 चम्मच धनिया पाउडर
–1 चम्मच नमक (स्वादानुसार)

कश्मीरी लाल पनीर बनाने का तरीका–

कश्मीरी लाल पनीर बनाने के लिए सबसे पहले पनीर को ध ोकर उसे 2 इंच लंबे टुकड़ों में काटकर अलग रख लें। इसके बाद एक बाउल में कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर, पिसी अदरक, पिसी सौंफ और धनिया पाउडर और (कप पानी डालकर उसका पेस्ट बना लें। अब एक पैन में सरसों का तेल तेज आंच पर गर्म कर लें। जब तेल गर्म हो जाए तो आंच मीडियम करके पैन में पनीर के टुकड़े डालकर उन्हें ब्राउन होने तक भून लें। इसके बाद पनीर के टुकड़ों को पैन से निकालकर 2 कप पानी से भरे कटोरे में डाल दें। अब उसी पैन के तेल में जीरा, हींग, तेजपत्ता, लौंग, हरी इलायची और दालचीनी डालकर उन्हें 4–5 सेकेंड तक चटकने दें। इसके बाद पैन में मसाले का पेस्ट डालकर अच्छी तरह मिलाएं। अब गैस को धीमी आंच पर करके 2 मिनट तक पकाएं। जब पैन के किनारों से तेल अलग होने लगे तो पनीर वाले पानी में नमक डालकर करी को उबाल लें। इसके बाद पैन में तला हुआ पनीर डालकर 10 मिनट तक और पकाएं। आपका टेस्टी कश्मीरी लाल पनीर बनकर तैयार है। आप इसे चावल और रोटी के साथ गरमागरम सर्व करें।

नोट–

कश्मीरी लाल पनीर की ग्रेवी बनाते समय नारंगी रंग की नजर आती है लेकिन कुछ देर इसे रखने के बाद आप देखेंगे कि तेल ऊपर आ जाता है और ग्रेवी का रंग गहरे लाल रंग का हो जाता है।

पढ़ाई के वक्त बच्चे का मन भटकता है तो अटेंशन के लिए इन बातों का रखें ध्यान

बच्चे को जब भी पढ़ाने बैठाईए तो पढ़ाई छोड़कर उसके दिमाग में सारी बातें चलती है। नतीजा, बार–बार वो खेलने की जिद करता है या फिर उसको स्टडी समझ में नहीं आती। ऐसे में बच्चे का मन पढ़ाई में लग ही नहीं पाता। लाख कोशिशों के बाद भी बच्चे का ध्यान पढ़ाई पर नहीं रहता है तो जरूरी है पैरेंट्स होने के नाते उसे इन चीजों की प्रेक्टिस कराएं। जिससे कि पढ़ते वक्त वो केवल पढ़ाई पर फोकस कर पाएं।

फिजिकल एक्टीविटी

बच्चे के लिए मूवमेंट और फिजिकल एक्टीविटी बहुत जरूरी है। इससे शरीर को फुर्ती मिलती है और न्यूरोट्रांसमीटर का प्रोडक्शन होता है और कार्टिसोल यानी कि स्ट्रेस हार्मोंस कम प्रोड्यूस होता है। नतीजा, दिमाग में ब्लड का फ्लो बढ़ता है और दिमाग को एकाग्रचित्त होकर काम करने में दिक्कत नहीं होती है।

हेल्दी खाना है जरूरी

बच्चे को हमेशा हेल्दी खाने की चीजें दें। जिससे उसे सारे पोषण मिले। न्यूट्रिशियस खाना केवल बॉडी की हेल्थ को नहीं बनाता बल्कि मेंटल हेल्थ को भी स्ट्रांग करता है।

जरूरी हैं सारे फिजिकल वर्क

खेल–कूद और पढ़ाई के साथ ही सोना भी बेहद जरूरी है। बच्चे को पर्याप्त नींद लेने दें। इससे स्ट्रेस हार्मोंस कम बनते हैं और दिमाग पूरी तरह से काम कर पाता है।

पर्याप्त पानी पिलाएं

बच्चे अक्सर पानी पीने के मामले में लापरवाह होते हैं। इसलिए उनके खानपान के साथ ही पानी का भी पूरा ध्यान रखें। पर्याप्त मात्रा में पानी बॉडी के सारे ऑर्गस को ठीक से काम करने में मदद करता है। इसके साथ ही बच्चे को प्रोसेस्ड फूड और आर्टीफिशियल कलर वाले जूस, कैंडी जैसी चीजें देने से बचें। ये बच्चे के अटेंशन लेवल को कम करती हैं और शरीर में डिहाइड्रेशन को बढ़ा देते हैं।

बच्चे को बढ़ावा दें

मोटिवेशन हर किसी के लिए जरूरी होता है। बच्चों को अगर पॉजिटिव तरीके से सिखाया जाए और तारीफ की जाए तो उनका दिमाग तेजी से काम करता है और वो चीजों को जल्दी सीखने की कोशिश करते हैं। ये टेक्नीक बच्चों का कंस्ट्रेशन और फोकस बढ़ाने के लिए काम आती है।

बच्चे को सीधे बताएं क्या करना है

बच्चे का कंस्ट्रेशन पढ़ाई पर रहे इसके लिए गोल्स सेट कर दें और उसके बारे में बिल्कुल क्लियर बता दें। जैसे कि आज उसे ये चौप्टर लर्न करना है। फिर उसे सिखाएं और समझाएं। ऐसा करने से बच्चे ज्यादा जल्दी से चीजों को सीखने की कोशिश करते हैं और कंस्ट्रेशन भी लगता है।

रायते में प्याज डालकर खाने वाले हो जाएं सावधान, सेहत को होते हैं ये नुकसान

गर्मियों में अक्सर कई लोग रायते का स्वाद बढ़ाने के लिए उसमें प्याज और टमाटर काटकर डाल देते हैं। आपके ऐसा करने से हो सकता है रायते का स्वाद बढ़ जाए लेकिन आपकी सेहत को अनजाने में काफी नुकसान हो सकता है। जी हां, आयुर्वेद में कई ऐसी चीजें हैं, जिनका सेवन दही के साथ करने की सख्त मनाही होती है, ऐसी ही एक चीज प्याज भी है। आइए जानते हैं प्याज और दही का सेवन एक साथ करने से सेहत को होते हैं क्या नुकसान। इसके अलावा यह भी जानेंगे कि दही के साथ किन चीजों का सेवन करने से व्यक्ति को बचना चाहिए।

प्याज और दही क्यों नहीं खाना चाहिए एकसाथ?

आयुर्वेद की मानें तो दही और प्याज दोनों की तासीर अलग–अलग होती है। प्याज तासीर में गर्म तो दही की तासीर ठंडी होती है। इन दोनों चीजों का एकसाथ सेवन करने से व्यक्ति को दाद, खाज, खुजली, एग्जिमा, सोराईसिस, त्वचा और पेट से संबंधित कई बीमारियां अपना शिकार बना सकती हैं।

गैस की समस्या–

अगर आप पहले से ही पेट में गैस बनने या दर्द और जलन से परेशान रहते हैं तो भूलकर भी दही और प्याज का सेवन एक साथ न करें। ये आपकी समस्या को और बढ़ा सकता है।

त्वचा से जुड़ी समस्याएं–

प्याज के साथ दही का सेवन करने से त्वचा से जुड़ी कई समस्याएं भी हो सकती हैं। ऐसा करने पर व्यक्ति को त्वचा में रैशेज, दाद खुजली की परेशानी बढ़ जाती है।

दही के साथ इन चीजों का भी न करें सेवन–

दूध और दही–

दूध और दही का एकसाथ सेवन करने से मतली और पेट खराब होने के साथ एसिडिटी, और गैस की समस्या भी हो सकती है।

दही और उड़द की दाल–

दही और उड़द की दाल का ये कॉम्बिनेशन भी सेहत को नुकसान पहुंचाता है। दही के साथ उड़द की दाल पेट में जाकर शरीर के पाचन तंत्र को प्रभावित कर सकती है, जिससे व्यक्ति को पाचन से जुड़ी समस्या पैदा हो सकती है।

आम और दही–

भले ही आपको आम और दही का ये फूड कॉम्बिनेशन बेहद पसंद हो, लेकिन भूलकर भी इन दोनों चीजों को एक साथ नहीं खाना चाहिए। आम और दही की तासीर अलग–अलग होने की वजह से ये दोनों चीजें शरीर के लिए टॉक्सिन बन जाती हैं।

रिश्तों में खटास की बड़ी वजह बनती जा रही है फबिंग, जानें क्या है ये और कैसे इससे बचें

समय के साथ दुनिया आधुनिक होती जा रही है, जो कहीं न कहीं आजकल के रिश्तों के लिए घातक साबित हो रही है। दरअसल, आजकल स्मार्टफोन लोगों की जिंदगी का एक जरुरी हिस्सा बन गया है। लगभग सभी अपना ज्यादातर समय फोन में रील्स या अन्य चीजें स्क्रॉल करने में लगा देते हैं। ऐसे में रिश्ते, पार्टनर और उनकी जरूरतों का ध्यान रखने का उनके पास समय ही नहीं बचता है। सिर्फ इतना ही नहीं लोग तो फोन देखने के चक्कर में अपने पार्टनर की बात तक नहीं सुनते हैं।

फोन पर ध्यान देने के लिए अपने साथी की बातों को नजरअंदाज करने को 'फबिंग' कहते हैं। श्फबिंगश टर्म आजकल काफी चर्चा में है क्योंकि इसकी वजह से लोगों के रिश्ते खराब होते जा रहे हैं। 2022 के एक अध्ययन में पाया गया है कि फोन में लगे रहने और पार्टनर पर ध्यान नहीं देने की वजह से रिश्ते में अविश्वास और बहिष्कार की भावना पैदा हो सकती है। ऐसे में अगर आप भी अपने पार्टनर की फबिंग की आदत से परेशान है तो हम आपके लिए कुछ टिप्स लेकर आये हैं, जो आपके रिश्ते को खत्म होने से बचाएंगी।

फबिंग से परेशान हैं, तो इसके बारे में बात करें– आपको पार्टनर की फबिंग की आदत परेशान कर रही है तो आप इस बारे में उनसे साफ–साफ बात करें। बात करने और पार्टनर को समझाने से चीजें काफी हद तक सुधर सकती है। लेकिन ध्यान रहे कि आप अच्छे से और साफ–साफ तरीके से पार्टनर को मसला समझाएं। एक्सपर्ट कहते हैं कि जैसे ही आप अपने पार्टनर की किसी बात से परेशान होना शुरू हो जाते हैं, तब समय निकालकर अपने साथी से इस बारे में बात करें।

पार्टनर के साथ में मिलकर सीमा तय करें– श्फबिंगश की आदत अच्छी नहीं है और इसे छोड़ना आसान नहीं है। इसलिए पार्टनर की इस आदत को छुड़वाने के लिए सीमाएं निर्धारित करें। पार्टनर के साथ बैठे और कहाँ फोन का इस्तेमाल करना है और कहाँ नहीं इस बारे में चर्चा करें। एक्सपर्ट की मानें तो कपल को बेडरूम में, डिनर के समय फोन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इसके लिए लोग अपने फोन के नोटिफिकेशन को बंद कर सकते हैं ताकि उनका ध्यान भटके नहीं और वह अपने पार्टनर के साथ कुछ समय बिता पाएं।

संक्षिप्त

वार्म–अप मैच से पहले बड़ा झटका, शुभमन चोटिल, पहले दिन नहीं करेंगे फील्डिंग, राहुल संभाल रहे कप्तानी

कोलंबो,एजेंसी। भारत के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल श्रीलंका दौरे पर जाते ही चोटिल हो गए हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने जानकारी दी कि गुरुवार को अभ्यास सत्र के दौरान गिल के दाएं हाथ की रिंग फिंगर में इम्पैक्ट इंजरी हुई है। एहतियात के तौर पर उन्हें श्रीलंका इलेवन के खिलाफ तीन दिवसीय वार्म–अप मैच के पहले दिन फील्डिंग से बाहर रखा गया है। बीसीसीआई ने अपने बयान में कहा, कप्तान शुभमन गिल को गुरुवार के अभ्यास के दौरान दाएं हाथ की रिंग फिंगर में चोट लगी। सावधानी के तौर पर वह वार्म–अप मैच के पहले दिन मैदान पर नहीं उतरेंगे। बीसीसीआई की मेडिकल टीम उनकी स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है। बोर्ड ने यह भी बताया कि गिल की गैरमौजूदगी में अनुभवी बल्लेबाज केएल राहुल टीम की कप्तानी करेंगे। कोलंबो के नॉनडिस्क्रिप्ट्स क्रिकेट क्लब ग्राउंड में खेले जा रहे तीन दिवसीय अभ्यास मैच में श्रीलंका इलेवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया है। हालांकि, अगर आज भारतीय टीम की बल्लेबाजी आती है तो गिल इसके लिए उपलब्ध रहेंगे या नहीं, इस पर फिलहाल कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। भारत के लिए यह चोट चिंता का विषय हो सकती है, क्योंकि 15 अगस्त से श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज शुरू होनी है। टीम प्रबंधन उम्मीद करेगा कि कप्तान जल्द पूरी तरह फिट होकर सीरीज के पहले टेस्ट तक उपलब्ध हो जाएं। जसप्रीत बुमराह पहले ही चोटिल होकर सीरीज से बाहर हो चुके हैं, जबकि साई सुदर्शन को अभी तक फिटनेस क्लीयरेंस नहीं मिला है। श्रीलंका टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का स्क्वॉडरू शुभमन गिल (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), साई सुदर्शन, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, गुरनूर बरार, देवदत्त पडिक्कल, सारांश जैन और आकिब नबी।

विश्वकप में किन 3 खिलाड़ियों पर रहेंगी हाशिम अमला की नजरें? जताई अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद

नई दिल्ली,एजेंसी। वनडे विश्वकप 2027 को लेकर सभी टीमों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। सभी टीमों में प्रयोगों का दौर जारी है। विश्वकप अगले साल अक्तूबर–नवंबर में दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया और जिम्बाब्वे की मेजबानी में खेला जाना है। इस टूर्नामेंट को लेकर दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज हाशिम अमला ने एक बड़ी भविष्यवाणी की है। उन्होंने आईसीसी से बातचीत में तीन खिलाड़ियों के नाम बताए, जो उन्हें लगता है कि विश्वकप में कमाल कर सकते हैं। इन तीनों पर अमला की नजरें होंगी। अमला ने जिन तीन खिलाड़ियों के नाम लिए हैं, उनमें भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया से एक–एक खिलाड़ी है। अमला ने भारत से रोहित शर्मा को चुना है। हालांकि, रोहित का अभी वनडे विश्वकप में खेलना तय नहीं है। हाल फिलहाल में कई रिपोर्ट्स आईं कि चयनकर्ता उनके विश्वकप में खेलने को लेकर निश्चित नहीं हैं। हाल ही में इंग्लैंड दौरे पर यहां तक अफवाहें फैली थीं कि लॉर्ड्स में वनडे उनका आखिरी वनडे होगा। हालांकि, बाद में बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने इन रिपोर्ट्स का खंडन किया था। रोहित वनडे विश्वकप में भारत के तीसरे सबसे सफल बल्लेबाज हैं। उनके नाम 28 मैचों में 60.57 की औसत से 1575 रन हैं। इनमें सात शतक और छह अर्धशतक शामिल हैं। उनसे आगे केवल सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली हैं। सचिन ने 45 मैचों में 56.95 की औसत से 2278 रन और विराट कोहली ने 37 मैचों में 59.83 की औसत से 1795 रन बनाए हैं। अमला ने दूसरा नाम द. अफ्रीका के युवा बल्लेबाज डेवाल्ड ब्रेविस का लिया। ब्रेविस ने अब तक कोई विश्वकप नहीं खेला है। अगर वह विश्वकप की टीम में चुने जाते हैं तो 2027 उनका पहला वनडे विश्वकप होगा। ब्रेविस को दक्षिण अफ्रीका का भविष्य माना जाता है। उन्होंने अंडर–19 में खुद को साबित किया था। ब्रेविस हालांकि, द. अफ्रीका की वनडे टीम में अपनी जगह अभी पक्की नहीं कर पाए हैं, लेकिन उनमें काफी क्षमता है। वह अपने दम पर मैच पलट सकते हैं। इसके अलावा वह एक शानदार फील्डर भी हैं और जरूरत पड़ने पर गेंदबाजी भी कर सकते हैं। अमला ने तीसरा नाम ऑस्ट्रेलिया के विस्फोटक बल्लेबाज ट्रेविस हेड का लिया।

आठ महीने में 10 भारतीय खिलाड़ियों को लगी चोट, नाराज बीसीसीआई ने शुरू की फिटनेस मानकों की समीक्षा

मुंबई,एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के श्रीलंका दौरे से पहले कप्तान शुभमन गिल के चोटिल होने से टीम प्रबंधन की चिंता बढ़ गई है। कोलंबो में अभ्यास के दौरान गिल के दाहिने हाथ की अंगुली पर चोट लगी। इसके बाद उन्हें मेडिकल टीम ने तत्काल जरूरी उपचार दिया। कुछ देर बाद वह नेट्स पर लौटे, लेकिन फील्डिंग प्रैक्टिस के दौरान उनके हाथ में दोबारा चोट लग गई और उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। इसके बाद मेडिकल टीम ने उन्हें दोबारा मैदान पर नहीं लौटने दिया। वह श्रीलंका के खिलाफ वार्म अप मैच के पहले दिन फील्डिंग के लिए भी नहीं उतरे। गिल की चोट ऐसे समय में सामने आई है, जब भारतीय क्रिकेट में खिलाड़ियों की फिटनेस और फिजियो से जुड़े मुद्दों को लेकर बहस तेज है। पिछले आठ महीनों में करीब 10 भारतीय खिलाड़ियों के चोटिल होने के बाद भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड भी फिटनेस व्यवस्था की समीक्षा करने की तैयारी में है। भारतीय टीम में पिछले आठ महीनों के दौरान करीब 10 खिलाड़ियों के चोटिल होने की बात सामने आई है। इनमें जसप्रीत बुमराह, कप्तान शुभमन गिल, हार्दिक पांड्या और हर्षित राणा जैसे नाम शामिल हैं। खिलाड़ियों के बार–बार चोटिल होने को लेकर फिटनेस व्यवस्था पर भी सवाल उठ रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय टीम के हेड कोच गौतम गंभीर और फिटनेस से जुड़े सपोर्ट स्टाफ के बीच भी इस मुद्दे पर चर्चा हुई है। बीसीसीआई की ओर से खिलाड़ियों की फिटनेस और चोट प्रबंधन व्यवस्था की आंतरिक समीक्षा कराए जाने की बात भी सामने आई है। इसके बाद बोर्ड मौजूदा फिटनेस मानकों में बदलाव करने पर फैसला ले सकता है।

भारतीय खिलाड़ियों के लगातार चोटिल होने के बीच टीम की फिजियो और फिटनेस व्यवस्था भी सवालों के घेरे में है। खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लंबे और व्यस्त कार्यक्रम के लिए तैयार रखने के लिए फिटनेस मानकों को लेकर बोर्ड नए सिरे से विचार कर सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक, बीसीसीआई ने फिटनेस के स्तर में गिरावट

और खिलाड़ियों के चोटिल होने के बढ़ते मामलों को गंभीरता से लिया है। बोर्ड की आंतरिक समीक्षा में टीम के प्रदर्शन और खिलाड़ियों की फिटनेस को प्रभावित करने वाले कारणों पर विचार किया जा रहा है। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की फिटनेस भी पिछले कुछ समय से चर्चा में रही है। श्रीलंका दौरे से पहले उनकी उपलब्धता को लेकर भी स्थिति साफ नहीं रही। वहीं, युवा तेज गेंदबाज हर्षित राणा के वजन को लेकर भी सवाल उठे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, राणा का वजन पिछले टी20 विश्व कप से पहले करीब चार किलोग्राम बढ़ा था। बाद में उन्होंने फिट होने के लिए कड़ी मेहनत की और वजन कम किया। हालांकि, मौजूदा समय में उनका वजन फिर बढ़ने की बात सामने आई है। इससे खिलाड़ियों के फिटनेस स्तर को लेकर टीम प्रबंधन की चिंताएं बढ़ी हैं। भारतीय टीम में फिटनेस जांच के लिए ब्रोंको टेस्ट को लेकर भी चर्चा होती रही है। पिछले साल टीम के स्ट्रेंथ और कंडीशनिंग कोच ने इस टेस्ट को लागू करने की पहल की थी, लेकिन इसके लिए तय मानक नहीं थे। नई जानकारी के मुताबिक, ब्रोंको टेस्ट के लिए मानक तय किए गए थे, लेकिन खिलाड़ियों के प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें कुछ हद तक हल्का किया गया। बीसीसीआई ने फिटनेस टेस्ट में पुरुष क्रिकेटरों के लिए समय सीमा 5.15 से 5.20 मिनट तय की थी, जबकि सीओई ने दो किलोमीटर की दौड़ पूरी करने के लिए नौ–10 मिनट का समय निर्धारित किया है। हालांकि, यह टेस्ट अभी तक पूरी तरह लागू नहीं हो सका है।

श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले भारतीय टीम के हेड कोच गौतम गंभीर ने खिलाड़ियों से हर परिस्थिति के लिए तैयार रहने को कहा है। उन्होंने एक वीडियो संदेश में कहा कि टीम को आगामी चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार रहना होगा। गंभीर ने खिलाड़ियों से कहा कि उन्हें हर सवाल का जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि टीम को हर चुनौती का सामना करना होगा और 15 अगस्त की सुबह तक खुद को पूरी तरह तैयार रखना होगा। ऐसे में गिल की चोट ने टीम की तैयारियों के बीच नई चिंता जरूर पैदा कर दी है। अब सभी की नजर इस बात पर होगी कि भारतीय कप्तान कितनी जल्दी पूरी तरह फिट होकर मैदान पर लौटते हैं। लगातार चोटों के मामलों के बीच बीसीसीआई फिटनेस मानकों में बदलाव कर सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, चोटिल खिलाड़ियों की फिटनेस जांच पहले की तुलना में ज्यादा सख्त तरीके से की जा सकती है। इसके अलावा चोटिल खिलाड़ियों को फिट घोषित करने से पहले अलग–अलग दिन दो बार ब्रोंको टेस्ट कराया जा सकता है। छह महीने में सभी खिलाड़ियों की फिटनेस जांच करने की भी योजना है। शिविर में आने वाले खिलाड़ियों का भी ब्रोंको टेस्ट होगा और इसके परिणाम के आधार पर ट्रेनिंग शेड्यूल तय किया जा सकता है।

भारतीय टीम में जगह नहीं मिलने पर सरफराज का पोस्ट वायरल, 2024 के बाद नहीं मिला टेस्ट खेलने का मौका

मुंबई,एजेंसी। श्रीलंका के खिलाफ आगामी दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम में जगह नहीं मिलने के बाद बल्लेबाज सरफराज खान ने सोशल मीडिया पर एक क्रिप्टिक पोस्ट शेयर किया है। लंबे समय से टीम से बाहर चल रहे सरफराज ने एक फिल्म के दृश्य की तस्वीर पोस्ट करते हुए ऐसा संदेश लिखा, जिसे उनके मौजूदा हालात से जोड़कर देखा जा रहा है। उन्होंने संकेत दिया कि टीम में फिट नहीं बैठने के बावजूद वह अपनी जगह हासिल करने के लिए पूरी ताकत से लड़ते रहेंगे। सरफराज खान ने इंस्टाग्राम पर एक फिल्म की तस्वीर शेयर की। इसके साथ उन्होंने लिखा, श्हो सकता है मैं फिट न बैठूं, लेकिन मेरे पास जो कुछ है, उसके साथ मैं पूरी ताकत से लड़ूंगा।श सरफराज का यह पोस्ट ऐसे समय आया है, जब उन्हें श्रीलंका दौरे के लिए चुनी गई भारतीय टेस्ट टीम में जगह नहीं मिली है। इसके बाद उनके इस संदेश को टीम में वापसी की कोशिशों और मौजूदा स्थिति से जोड़कर देखा जा रहा है। सरफराज ने भारत के लिए आखिरी टेस्ट मैच 2024 में न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज के दौरान खेला था। तीन मैचों की उस टेस्ट सीरीज में उन्होंने छह पारियों में 171 रन बनाए थे। हालांकि, इसके बाद उन्हें भारतीय टीम में नियमित जगह नहीं मिल सकी। श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए

भी चयनकर्ताओं ने उन्हें टीम में शामिल नहीं किया है। अब सरफराज के सामने घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर चयनकर्ताओं का ध्यान फिर से अपनी ओर खींचने की चुनौती होगी। सरफराज ने घरेलू क्रिकेट में लंबे समय तक शानदार प्रदर्शन के बाद भारतीय टीम में जगह बनाई थी।

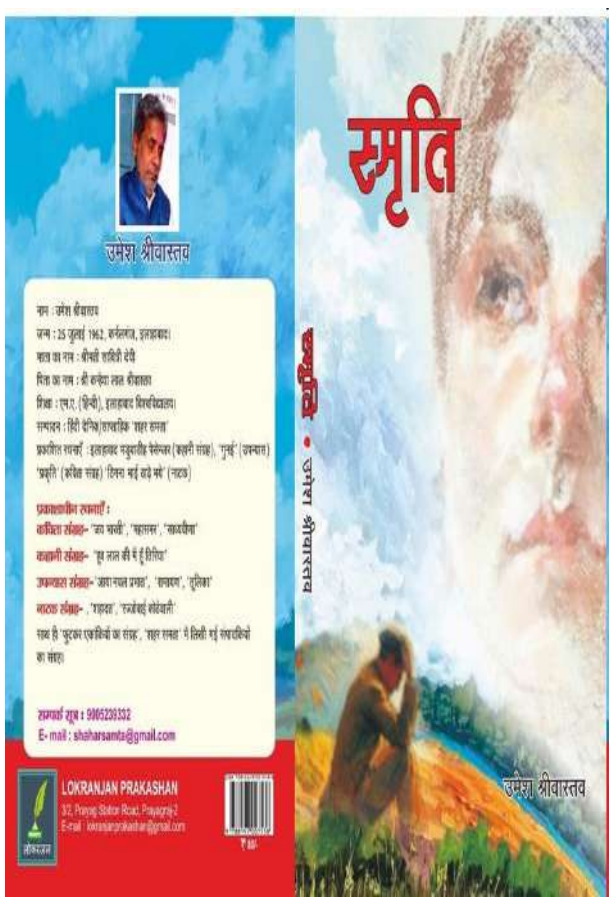

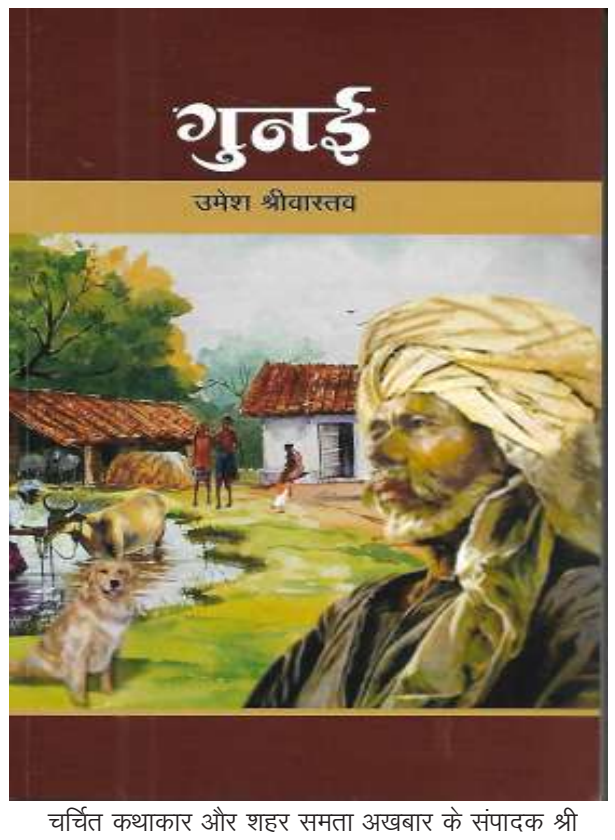

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

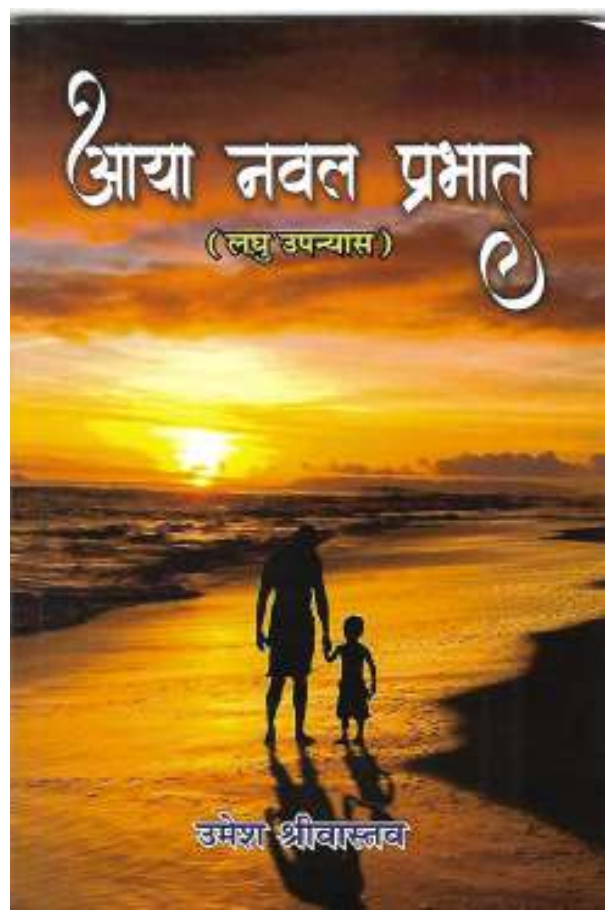

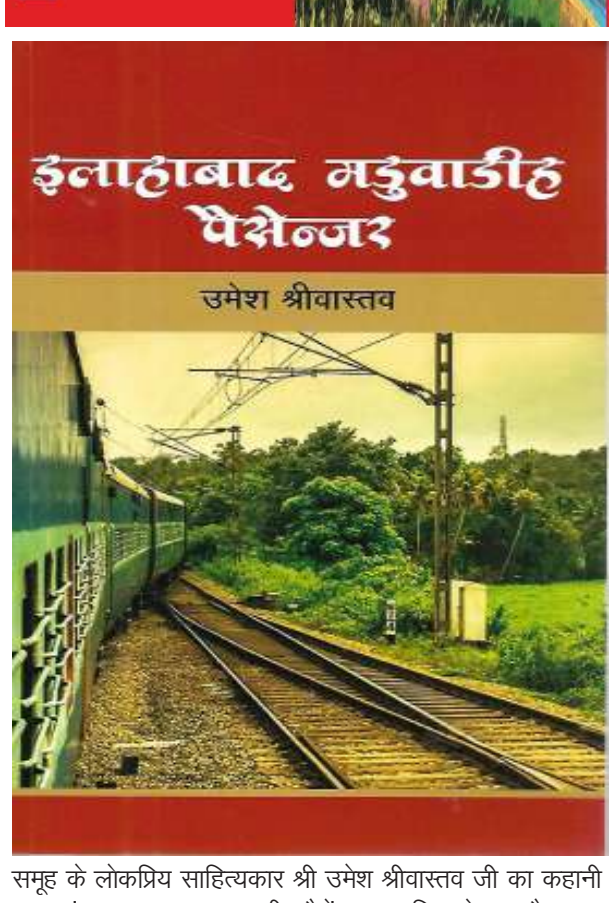

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

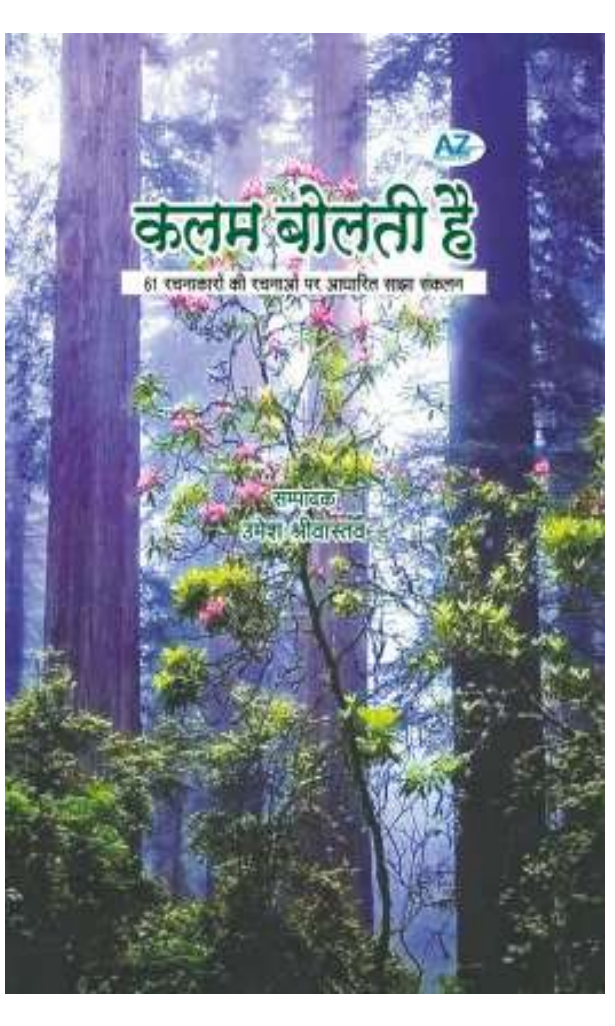

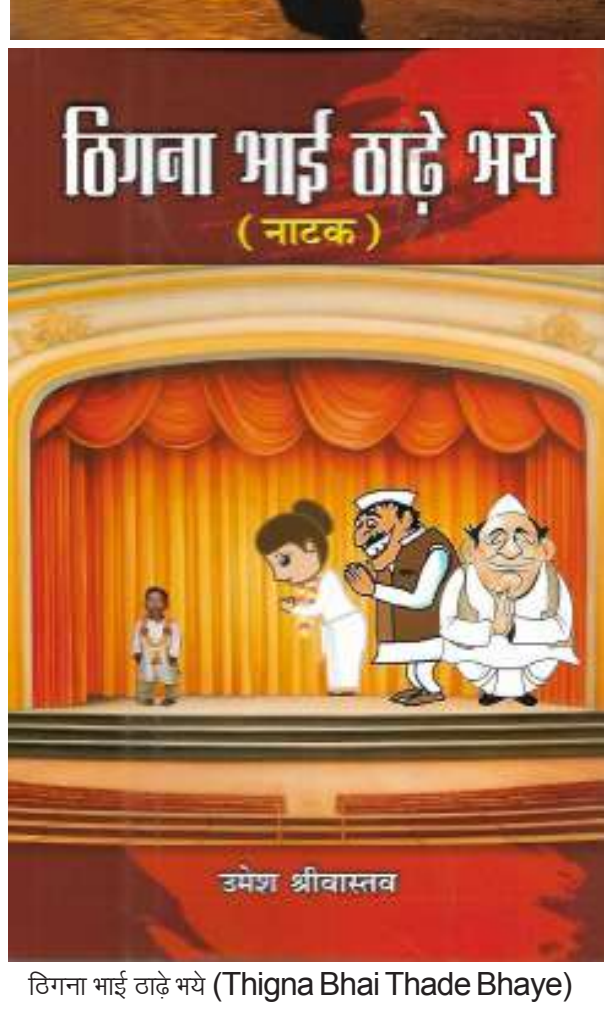

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

जन्म से मिलने वाली अमेरिकी नागरिकता पर डोनाल्ड ट्रंप का नया वार, `बर्थ टूरिज्म' रोकने के लिए दो आदेश जारी

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जन्म के आधार पर मिलने वाली अमेरिकी नागरिकता को सीमित करने और श्बर्थ टूरिज्मश पर रोक लगाने के लिए गुरुवार को दो नए कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है, जब कुछ सप्ताह पहले ही अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर ट्रंप के पहले आदेश को खारिज कर दिया था। क्या है पहला आदेश? पहले आदेश का उद्देश्य उन लोगों पर कार्रवाई करना है जो केवल बच्चे को अमेरिका में जन्म दिलाने के लिए वहां आते हैं। इसे श्बर्थ टूरिज्मश कहा जाता है। ट्रंप प्रशासन का कहना है कि ऐसे लोग पर्यटन वीजा का इस्तेमाल करते हैं, जबकि उनका असली मकसद बच्चे को अमेरिका में जन्म देकर उसे अमेरिकी नागरिक बनवाना होता है। दूसरे आदेश में क्या है? दूसरे आदेश में उन लोगों की श्रेणियों का दायरा बढ़ाया गया है, जिन्हें जन्म के आधार पर नागरिकता के लिए अयोग्य माना जाएगा। इसमें विदेशी सरकारों के लिए काम करने वाले या उनकी ओर से लॉबिंग करने वाले लोगों के बच्चों समेत कुछ अन्य श्रेणियां शामिल की गई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने पहले आदेश को किया था खारिज 30 जून को अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप के पहले कार्यकारी आदेश को रद्द कर दिया था। अदालत ने कहा था कि 100 वर्षों से चली आ रही संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार, अमेरिका में जन्म लेने वाले लगभग सभी लोगों को अमेरिकी नागरिकता मिलती है। ट्रंप बोले– सुप्रीम कोर्ट का फैसला दुर्भाग्यपूर्ण ओवल ऑफिस में आदेशों पर हस्ताक्षर करने के बाद ट्रंप ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला दुर्भाग्यपूर्ण था और उनकी सरकार अब उसमें जरूरी बदलाव कर रही है। उन्होंने कहा, श्सुप्रीम कोर्ट का जन्मसिद्ध नागरिकता पर फैसला बहुत दुर्भाग्यपूर्ण था। इसलिए हम इसमें आवश्यक बदलाव कर रहे हैं। 14वां संशोधन क्या कहता है? अमेरिकी संविधान का 14वां संशोधन, जिसे 9 जुलाई 1868 को लागू किया गया था, अमेरिका में जन्म लेने या नागरिकता प्राप्त करने वाले सभी लोगों को अमेरिकी नागरिक मानता है। यह प्रावधान गृहयुद्ध के बाद पूर्व गुलामों को नागरिकता देने के लिए लाया गया था। ट्रंप ने कहा कि यह कानून उस समय की जरूरत के लिए बनाया गया था, लेकिन अब कुछ लोग इसका गलत फायदा उठाकर श्बर्थ टूरिज्मश का कारोबार चला रहे हैं। व्हाइट हाउस का क्या तर्क है? व्हाइट हाउस के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ स्टीफन मिलर ने कहा कि कई लोग पर्यटक बनकर अमेरिका आते हैं, लेकिन उनका असली उद्देश्य बच्चे को अमेरिका में जन्म दिलाना होता है ताकि उसे स्वतः नागरिकता मिल जाए। उनके अनुसार, इससे ऐसे परिवारों को भविष्य में सरकारी योजनाओं, अन्य सुविधाओं और नागरिक अधिकारों तक पहुंच मिल जाती है। विशेषज्ञों ने बताया असंवैधानिक

आव्रजन कानून के विशेषज्ञों ने राष्ट्रपति ट्रंप के नए आदेशों का विरोध किया है। न्यूयॉर्क के इमिग्रेशन वकील साइरस मेहता ने कहा कि यह आदेश अमेरिकी संविधान के 14वें संशोधन का उल्लंघन करता है। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक लेन–देन जैसी परिभाषा बहुत अस्पष्ट है और इसे अदालत में चुनौती दी जा सकती है। वहीं, अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनियन (एसीएलयू) ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि जन्मसिद्ध नागरिकता संविधान द्वारा सुरक्षित अधिकार है। ऐसे में ट्रंप का नया आदेश भी अदालत में टिकना मुश्किल होगा। क्या कहते हैं आंकड़े?

माइग्रेशन पॉलिसी इंस्टीट्यूट के अनुसार, हर साल अमेरिका में श्बर्थ टूरिज्मश के जरिए करीब 22,000 से 26,000 बच्चों का जन्म होने का अनुमान है। हालांकि सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2024 में विदेशी पते वाली माताओं से 9,600 बच्चों का जन्म अमेरिका में दर्ज किया गया था। अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें

संक्षिप्त

अंतरिक्ष में भारतवंशी अनिल मेनन का कमाल: पहले ही स्पेसवॉक से ISS को दी नई ताकत, और ताकतवर होगा स्पेस स्टेशन

एजेंसी/नासा के अंतरिक्ष यात्री अनिल मेनन और जेसिका मेयर ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के बाहर सफलतापूर्वक स्पेसवॉक पूरा किया। इस दौरान दोनों ने स्टेशन के 3B पावर चौनल के लिए संशोधन किट (मॉडिफिकेशन किट) स्थापित की, जिससे भविष्य में नए रोल–आउट सोलर एरे (IROSA) लगाए जा सकेंगे। यह स्पेसवॉक अंतरिक्ष

स्टेशन में किया गया 281वां स्पेसवॉक था। जेसिका मेयर के करियर का यह छठा और अनिल मेनन का पहला स्पेसवॉक रहा। स्पेसवॉक कितनी देर चला और इसमें क्या–क्या किया गया? स्पेसवॉक गुरुवार को सुबह 8:33 बजे (ईडीटी) यानी भारतीय समयानुसार शाम 6:03 बजे शुरू हुआ और 6 घंटे 27 मिनट बाद दोपहर 3:00 बजे (ईडीटी) यानी भारतीय समयानुसार शुक्रवार तड़के 12:30 बजे समाप्त हुआ। दोनों अंतरिक्ष यात्री क्वेस्ट एयरलॉक से बाहर निकले और अंतरिक्ष स्टेशन के बाहरी हिस्से पर कई महत्वपूर्ण संरचनात्मक सुधार किए। 3B पावर चौनल पर क्या काम हुआ और यह क्यों अहम है? इस स्पेसवॉक का मुख्य उद्देश्य स्टारबोर्ड–6 ट्रस पर स्थित 3B पावर चौनल में माउंटिंग हार्डवेयर स्थापित करना था। नासा के अनुसार, इस काम से भविष्य में इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन रोल–आउट सोलर एरे (IROSA) लगाए जा सकेंगे। नए सोलर एरे स्टेशन को अतिरिक्त बिजली उपलब्ध कराएंगे, जिससे उसके महत्वपूर्ण सिस्टम अधिक प्रभावी ढंग से काम करेंगे। साथ ही, भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशन के सुरक्षित और नियंत्रित डीऑर्बिट मिशन में भी यह अहम भूमिका निभाएंगे। IROSA परियोजना कितनी आगे बढ़ चुकी है? नासा ने बताया कि वर्ष 2021 से अब तक अंतरिक्ष यात्रियों ने स्पेसवॉक के जरिए प्ट्रे। की छह असेंबली सफलतापूर्वक स्थापित कर दी हैं। अब केवल दो सोलर एरे लगाए जाने बाकी हैं, जिन्हें इसी वर्ष के अंत तक अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचाया जाएगा। अनिल मेनन और जेसिका मेयर ने कौन–कौन से तकनीकी कार्य पूरे किए? स्पेसवॉक के दौरान अनिल मेनन को एक आर्टिकुलेटिंग पोर्टेबल फुट रेस्ट्रेंट पर सुरक्षित स्थिति में रखा गया, जिससे उन्हें ट्रस पर काम करने के लिए स्थिर आधार मिल सका। इसके बाद दोनों अंतरिक्ष यात्रियों ने भविष्य में लगाए जाने वाले प्ट्रे। से 3B पावर चौनल तक बिजली पहुंचाने वाली केबलें बिछाईं। साथ ही, ट्रस की संरचना को मल्टी–लेयर इंसुलेशन से भी ढक दिया, ताकि उसे अंतरिक्ष के अत्यधिक तापमान से सुरक्षित रखा जा सके। स्पेसवॉक के दौरान चांद को लेकर क्या दिलचस्प बातचीत हुई? काम के दौरान कुछ पल के लिए दोनों अंतरिक्ष यात्रियों ने बातचीत भी की। जेसिका मेयर ने अनिल मेनन से कहा, श्अनिल, तुम चांद को देख सकते हो. .. हालांकि मुझे नहीं पता कि तुम किस दिशा में देख रहे हो। इस पर अनिल मेनन ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, श्मेरी दाईं ओर है। हां, मैं उसे देख रहा हूं। बताने के लिए धन्यवाद। वहां मुझे भविष्य का एक चंद्र आधार (मून बेस) दिखाई दे रहा है। अगले स्पेसवॉक में कौन–से अहम काम किए जाएंगे? यह स्पेसवॉक एक्सपीडिशन–75 मिशन के तहत इस महीने होने वाले तीन स्पेसवॉक में पहला था। 13 अगस्त को होने वाले दूसरे स्पेसवॉक में अंतरिक्ष यात्री स्टेशन के स्पेस–टू–ग्राउंड एंटीना को बदलेंगे। यह एंटीना ह्यूस्टन स्थित मिशन कंट्रोल सेंटर और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के बीच तेज गति से डेटा और संचार बनाए रखने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। 25 अगस्त को होने वाले तीसरे स्पेसवॉक में अंतरिक्ष यात्री पावर चौनल की केबलों और डेटा रिले सिस्टम को जोड़ेंगे। यह कार्य स्टेशन के नियमित रखरखाव के साथ–साथ उसके भविष्य के डीऑर्बिट मिशन की तैयारियों का हिस्सा है। इसके अलावा, हार्मनी मॉड्यूल के फॉरवर्ड पोर्ट पर लगे अंतरिक्ष यानों की डॉकिंग में इस्तेमाल होने वाले नेविगेशनल उपकरण को भी बदला जाएगा। नासा के अनुसार, यह कार्य अंतरिक्ष स्टेशन के सुरक्षित और सुचारु संचालन के लिए महत्वपूर्ण है।

Meta को अमेरिकी कोर्ट से बड़ा झटका: बच्चों की सुरक्षा में चूक पर 5400 करोड़ चुकाने का आदेश

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के न्यू मैक्सिको की एक अदालत ने इंस्टाग्राम और फेसबुक की पैरेंट कंपनी मेटा को उसके सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से युवाओं को हुए नुकसान की भरपाई के लिए 567 मिलियन डॉलर (करीब 5400 करोड़ रुपये) का भुगतान करने का आदेश दिया है। यह फैसला उस ऐतिहासिक मुकदमे के दूसरे चरण में आया है, जिसमें मार्च में मेटा को हार का सामना करना पड़ा था। क्या 567 मिलियन डॉलर की राशि कहां खर्च होगी? जज ब्रायन बिडशाइड के फैसले के अनुसार, कुल राशि में से 42 करोड़ डॉलर (420 मिलियन डॉलर) युवाओं के इलाज और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं पर खर्च किए जाएंगे। शेष राशि अगले पांच वर्षों में जागरूकता अभियान, रोकथाम कार्यक्रम, स्क्रीनिंग सेवाओं और अन्य संबंधित खर्चों के लिए उपयोग की जाएगी। मुकदमे के पहले चरण में जूरी ने मेटा पर 37.5 करोड़ डॉलर (375 मिलियन डॉलर) का सिविल जुर्माना लगाया था। जूरी ने माना था कि कंपनी को यह जानकारी थी कि उसके प्लेटफॉर्म बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

स्कूल गोलीबारी में आठ की मौत, 15 घायल, वारदात से पहले आरोपी छात्र ने दादा–दादी को भी मारी थी गोली

एजेंसी/थाईलैंड के एक स्कूल में शुक्रवार को गोलीबारी हुई। जिसमें छह लोगों की मौत हो गई है। वहीं, कई घायल है। मरने वाले में तीन शिक्षकों और तीन छात्र शामिल हैं। अधिकारियों के अनुसार यह घटना थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक के बाहरी इलाके में स्थित नोनथाबुरी जिले के देबसिरिन स्कूल में हुई।

कब हुई यह घटना? अधिकारियों ने बताया कि एक छात्र ने स्कूल में गोलीबारी की, जिसके बाद छात्र और शिक्षक भागने लगे। यह घटना स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 10 बजे हुई, जब पोह टेक तुंग फाउंडेशन के स्वयंसेवकों को प्रसिद्ध माध्यमिक विद्यालय के अंदर गोलीबारी की सूचना मिली। स्कूल पहुंचने से पहले किसे गोली मारी? जिनमें से दो की हालत नाजुक है। वहीं, छह मौतों की पुष्टि हो चुकी है। इस बीच, पुलिस अधिकारियों ने बताया है कि हमलावर ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या की। उन्होंने कहा कि मकसद की अभी जांच की जा रही है। लेकिन माना जा रहा है कि बंदूक छात्र के परिवार के किसी सदस्य से ली गई थी। हालांकि शुरुआती रिपोर्टों से पता चलता है कि स्कूल पहुंचने से पहले उसने अपने दादा–दादी को गोली मारी थी। सुरक्षाकर्मियों ने जनता से क्या अपील की? आपातकालीन कर्मचारियों द्वारा प्रसारित तस्वीरों में, एम्बुलेंस के घटनास्थल पर पहुंचने के साथ ही छात्र स्कूल से बाहर निकलते हुए दिखाई दिए। घटना का लाइव प्रसारण भी सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, और सुरक्षाकर्मियों ने जनता से घटना का लाइव प्रसारण न करने का अनुरोध किया है। प्रधानमंत्री ने शोक व्यक्त किया

प्रधानमंत्री अनुतिन चर्नविराकुल ने शोक व्यक्त किया। इसके साथ ही उन्होंने संबंधित अधिकारियों को पीड़ितों की देखभाल करने का आदेश दिया है। गोलीबारी के लगभग एक घंटे बाद घटनास्थल से मिली तस्वीरों में लोग स्कूल के बाहर खड़े होकर एक–दूसरे को सांत्वना देते हुए दिखाई दे रहे थे। प्रत्यक्षदर्शी ने क्या बताया? एक प्रत्यक्षदर्शी ने पत्रकारों को बताया कि जब छात्रों ने दूसरी इमारत से गोलियों की आवाज सुनी तो वे एक कक्षा के अंदर छिप गए, जिसके बाद पुलिस अधिकारियों ने दरवाजा खटखटाया और उनके लिए इमारत से बाहर निकलने का रास्ता साफ किया। फरवरी में क्या हुआ था?

यह घटना फरवरी में हुई एक स्कूल गोलीबारी में एक शिक्षक की मौत और एक छात्र के घायल होने के कुछ महीनों बाद हुई है। फरवरी में हुई घटना में, हमलावर की पहचान 18 वर्षीय युवक के रूप में हुई, जिसने सोंगखला प्रांत के फातोंग प्रथान खिरीवत स्कूल में गोलीबारी की थी। इस घटना के दौरान छात्रों और शिक्षकों को भी बंधक बना लिया गया था, लेकिन पुलिस के हस्तक्षेप के बाद उन्हें छुड़ा लिया गया। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, थाईलैंड में इस क्षेत्र में बंदूक रखने की दर सबसे अधिक है, जहां अनुमानित तौर पर लगभग 1 करोड़ हथियार हैं, जो हर सात निवासियों पर एक के बराबर है। बंदूक कानूनों को सख्त करने के सरकरा देश में बार–बार होने वाली गोलीबारी की घटनाओं को रोकने में विफल रही है।

`इस्लामिक नाटो' का गठन ?: तुर्किये, सऊदी अरब-पाकिस्तान के बीच जल्द होगा संयुक्त रक्षा समझौता, रिपोर्ट में दावा

रियाद , एजेंसी। तुर्किये, सऊदी अरब और पाकिस्तान शुक्रवार को सऊदी अरब में एक संयुक्त रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। इस खबर के बाद इन देशों के बीच सैन्य सहयोग बढ़ने

और कथित श्इस्लामिक नाटोश जैसी सुरक्षा व्यवस्था बनने की अटकलें फिर तेज हो गई हैं। हालांकि, पाकिस्तान पहले ही साफ कर चुका है कि यह व्यवस्था किसी देश के खिलाफ नहीं होगी। उसका कहना है कि इसका मकसद क्षेत्रीय शांति को मजबूत करना और बाहरी देशों पर निर्भरता कम करना है। पहले भी जताई थी बड़े गठबंधन की संभावना पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने मई में एक इंटरव्यू में कहा था कि पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच पहले से मौजूद रक्षा और आर्थिक सहयोग के ढांचे का विस्तार किया जा सकता है। इसमें भविष्य में कतर और तुर्किये को भी शामिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा था कि इस प्रस्ताव पर अलग–अलग स्तर पर चर्चा चल रही है और इसे अंतिम रूप देने की प्रक्रिया जारी है। यदि कतर और तुर्किये इसमें शामिल होते हैं तो यह क्षेत्र के लिए एक मजबूत आर्थिक और रक्षा सहयोग मंच बन सकता है। किसी के खिलाफ नहीं है यह समझौता ख्वाजा आसिफ ने कहा था कि इस तरह का समझौता किसी देश को निशाना बनाने के लिए नहीं है। इसका उद्देश्य क्षेत्र में शांति बनाए रखना और सुरक्षा के मामलों में बाहरी देशों पर निर्भरता कम करना है। उन्होंने कहा कि दुनिया के सभी देश एक–दूसरे से जुड़े हैं, लेकिन अपने क्षेत्र की शांति और सुरक्षा के लिए ऐसा सहयोग जरूरी है। पिछले साल हुआ था पाकिस्तान–सऊदी रक्षा समझौता पिछले साल पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सऊदी अरब यात्रा के दौरान दोनों देशों ने श्स्ट्रैटेजिक म्यूचुअल डिफेंस एग्रीमेंटश पर हस्ताक्षर किए थे। संयुक्त बयान में कहा गया था कि लगभग आठ दशक पुराने रिश्तों, इस्लामी एकजुटता, साझा रणनीतिक हितों और रक्षा सहयोग को और मजबूत करने के लिए यह समझौता किया गया है। इसके तहत दोनों देशों ने एक–दूसरे की सुरक्षा के प्रति सहयोग बढ़ाने का संकल्प लिया था। भारत ने जताई थी चिंता इस समझौते के बाद भारत ने कहा था कि वह इसके प्रभावों का सावधानी से अध्ययन करेगा। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा था कि भारत इस रक्षा समझौते के अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता पर पड़ने वाले असर का आकलन करेगा। उन्होंने कहा था कि भारत अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

क्या जल्द खत्म होगा पश्चिम एशिया का संघर्ष? ट्रंप ने किया बड़ा दावा य हथियारों की कमी पर भी बोले

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि ईरान के खिलाफ शुरू किया गया अभियान बेहद महत्वपूर्ण था, क्योंकि अमेरिका यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ईरान परमाणु हथियार हासिल न कर सके। ट्रंप ने यह भी दावा किया कि मौजूदा युद्ध अब ज्यादा लंबा नहीं चलेगा और उन्हें उम्मीद है कि यह जल्द समाप्त हो जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने उन खबरों को भी खारिज किया, जिनमें अमेरिकी सेना के पास जरूरी हथियारों और गोला–बारूद की कमी होने की बात कही जा रही थी। ट्रंप ने युद्ध जल्द खत्म होने का दिया संकेत? डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्होंने ईरान इस्लामिक गणराज्य के खिलाफ एक बहुत महत्वपूर्ण अभियान शुरू किया था। उनके अनुसार, इसका सबसे बड़ा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि ईरान परमाणु हथियार विकसित न कर सके। उन्होंने कहा श्मुझे लगता है कि यह युद्ध बहुत जल्द खत्म हो जाएगा। मुझे नहीं लगता कि यह अब ज्यादा लंबे समय तक चल सकता है।श हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि युद्ध समाप्त करने के लिए आगे क्या रणनीति अपनाई जाएगी। ईरान–ओमान वार्ता पर ट्रंप ने साधी चुप्पी? अपने बयान के दौरान ट्रंप ने ईरान और ओमान के बीच जारी बातचीत पर कोई टिप्पणी नहीं की। यह वार्ता ओमान जलडमरूमध्य और खासतौर पर होर्मुज जलडमरूमध्य से वाणिज्यिक जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चल रही है, ताकि इस महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग में किसी तरह का अतिरिक्त तनाव पैदा न हो। अमेरिकी सेना के पास हथियारों की कमी? हाल के दिनों में ऐसी कई रिपोर्टें सामने आई थीं,

मुआवजे के लिए सैनिकों से शादी कर रहीं महिलाएं: रूस में चल रहा गजब खेल, अस्पताल और सेना पर भी मिलीभगत के आरोप

मॉस्को, एजेंसी। यूक्रेन से युद्ध के बीच रूस में एक नया घोटाला सामने आया है। सीएनएन की रिपोर्ट के कई ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां महिलाएं युद्ध पर जा रहे सैनिकों से जल्दबाजी में शादी कर रही हैं और उनकी मौत के बाद मिलने वाला सरकारी मुआवजा हड़प जा रही है। रूस में हाल के महीनों में कई ऐसे मामले सामने आए हैं, जिनमें सैनिकों ने मोर्चे पर जाने से ठीक पहले या अस्पताल में मौत से पहले शादी की। इस पूरे घोटाले में सिर्फ महिलाएं व युवतियां ही नहीं, अस्पताल से लेकर सेना तक पर मिलीभगत के आरोप हैं। सबसे चर्चित मामला एक सैन्य अस्पताल में कार्यरत नर्स का है, जिस पर आरोप है कि उसने इलाज करा रहे पांच घायल सैनिकों से अलग–अलग समय पर शादी की। वह सैनिकों की मौत के बाद उनका मुआवजा लेना चाहती थी। एजेंसी पिता की मौत के बाद बेटी को पता चला–दो दिन पहले हुई थी शादी सेंट पीटर्सबर्ग की रहने वाली 37 वर्षीय मारिया ने सीएनएन को बताया कि जब उनके 59 वर्षीय पिता यूरी की यूक्रेन युद्ध में मौत हुई, तब मिलिट्री अधिकारियों से उन्हें पता चला कि उनके पिता ने मोर्चे पर जाने से ठीक दो दिन पहले अपने से 22 साल छोटी एक अनजान महिला से गुपचुप शादी कर ली थी। इस फर्जी शादी के कारण सरकार से मिलने वाला सारा मुआवजा (डेथ पेआउट) उस अनजान महिला को मिल गया। मारिया का आरोप है कि उनके पिता के साथ धोखा हुआ। सैनिक की मौत पर रूस में मिलती है 62 लाख रुपये की मदद रूस में युद्ध में मारे गए सैनिक के परिवार को सरकार की ओर से कम से कम 50 लाख रूबल (करीब 62 लाख भारतीय रुपये) की एकमुश्त मदद मिलती है। कई अन्य भुगतान और बीमा जोड़ दिए जाएं तो यह रकम और भी ज्यादा हो जाती है। इसी के लालच में महिलाएं अकेले, बुजुर्ग या कमजोर सैनिकों को शादी के लिए फंसाती हैं। युद्ध शुरू होने के बाद शादी के नियम हुए आसान 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद रूस ने सेना में भर्ती होने वाले लोगों के लिए शादी के नियम आसान कर दिए। आमतौर पर रूस में शादी के लिए आवेदन देने के बाद कुछ समय इंतजार करना पड़ता है, लेकिन युद्ध के दौरान इस प्रक्रिया में छूट दे दी गई। नए सैनिक चाहें तो भर्ती के तुरंत बाद शादी कर सकते थे। सरकार का मानना था कि इससे सैनिकों को परिवार का सहारा मिलेगा।

अमेरिका-कनाडा व्यापार वार्ता में बढ़ा तनाव, ट्रंप की टिप्पणी के बाद कार्नी क्या बोले?

टोरंटो , एजेंसी। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कनाडा और उसके नेतृत्व पर की गई टिप्पणी के बाद दोनों देशों के बीच चल रही व्यापार वार्ता श्कड़वीश हो गई है। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि कनाडा बातचीत में बना हुआ है और देश के कर्मचारियों तथा कारोबारों के हितों की रक्षा के लिए वार्ता जारी रखेगा। क्या ट्रंप की टिप्पणी के बाद भी कनाडा वार्ता में बना रहेगा?

मार्क कार्नी ने कहा कि यह बेहद कठिन बातचीत है। उन्होंने कहा कि इसे कड़वी कहा जा सकता है, लेकिन यह कनाडा के रोजगार और वहां के कारोबारों के भविष्य का सवाल है। उन्होंने बताया कि कनाडा के वार्ताकार इस सप्ताह वॉशिंगटन में मौजूद हैं।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।